हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार, 23 नवंबर 2025

12 बागडोगरा इंडोर स्टेडियम अर्जुन अवार्डी राममेहर...

12 खुले दरबार से नगर परिषद निपटाएगी लोगों की...

CHINAR FABRICS
Chinar Mill Showroom
चिनार मील शोरुम
नजदीक बासिया भवन, हांसी रोड, भिवानी M.: 70567-95900
महाबचत छूट
1 जैकेट 1599/- 799/- only
1 ब्लेजर 3599/- 1499/-only
3 पीस सूट 5999/- 2999/-only

खबर संक्षेप

पोर्टल पर धोखाधड़ी में आरोपी गिरफ्तार

भिवानी। थाना साईबर क्राईम पुलिस ने क्षतिपूर्ति पोर्टल पर जमीन अपने नाम करवाकर फसल का मुआवजा लेने के नाम पर धोखाधड़ी करने के मामले में दूसरे आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। गांव जमालपुर निवासी एक महिला ने थाना साईबर क्राईम पुलिस को एक शिकायत दर्ज करवाई थी जिसमें शिकायतकर्ता ने पुलिस को बताया कि उनके व उनके परिवार के सदस्यों की गांव जमालपुर व बलियाली में जमीन उनके नाम है।

कृष्णा कॉलोनी फीडर नौ बजे से रहेगा बंद

भिवानी। रविवार 23 नवंबर को 11केवी कृष्णा कॉलोनी फीडर सुबह नौ बजे से 12 बजे तक बंद रहेगा और इसके अंतर्गत आने वाले क्षेत्र की बिजली सप्लाई पूर्णरुप से बाधित रहेगी। जेई संजय कुमार ने बताया कि रविवार 23 नवंबर को 11केवी कृष्णा कॉलोनी फीडर की लाइन पर पेड़ों की छटाई व मेंटिनेंस संबंधी कार्य किया जाना हैं, जिसके चलते दिनोद गेट, खाड़ी मोहल्ला, कृष्णा कॉलोनी आदि क्षेत्र की बिजली सप्लाई सुबह नौ बजे से दोपहर 12 बजे तक बंद रहेगी, इसलिए क्षेत्रवासी निगम के कार्य में सहयोग करें और अपने कार्य उक्त समय से पूर्व पूर्ण कर लें।

बस यात्री महिला का पर्स चोरी, शिकायत दर्ज

लोहारू। लोहारू से पाजू जाने वाली एक महिला यात्रा काअज्ञात व्यक्ति ने पर्स चोरी कर लिया। पीड़ित महिला की शिकायत पर लोहारू पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया है। पुलिस को दी शिकायत में सतनाली निवासी महिला संतोष ने बताया कि वह अपने बच्चों के साथ लोहारू बस स्टेंड पहुंची थी और इस दौरान पाजू जाने वाली बस में बैठते समय अज्ञात व्यक्ति उसके बैग से पर्स चोरी कर ले गया। पर्स में मंगलसूत्र, 1200 रुपये नकद और जरूरी कागजात थे।

ईमानदारी का परिचय देने वाला सम्मानित

बहल। बिधनोई गांव के डॉ. संदीप खनगवाल द्वारा रास्ते में पड़े मिले करीब 15 लाख रुपये के गहने लौटाकर जो ईमानदारी का परिचय दिया था, उसकी पूरे बहल क्षेत्र में चर्चा हो रही है। समाजसेवी लोगों द्वारा समाज के लिए दिए गए उसके अनुकरणीय उदाहरण के लिए उसे सम्मानित किया जा रहा है। बहल भाजपा मंडल के कोषाध्यक्ष समाजसेवी हनुमान शर्मा ने भी डॉ. संदीप खनगवाल को उसकी नेक नीयत के लिए सम्मानित किया। शनिवार को हनुमान शर्मा ने उसके घर जाकर उसे ईमानदारी का परिचय देने के लिए बधाई दी।

कैडेटस ने निकाली जागरूकता रैली

बहल। बहल में 11 हरियाणा एनसीसी बटालियन भिवानी के निर्देशानुसार एनसीसी सप्ताह के अंतर्गत सहशैक्षणिक एवं जागरूकता आधारित गतिविधियों का आयोजन किया गया। विद्यालय के एनसीसी कैडेट्स ने अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, टीमवर्क, आत्मविश्वास एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए कार्यक्रम को विशेष रूप से यादगार बनाया। कार्यक्रम की शुरुआत स्वच्छता जागरूकता से संबंधित पोस्टर मेकिंग, स्लोगन लेखन, क्विज आदि प्रतियोगिताओं से की गई।

बुधवार तक दी पुलिस ने मोहल्लत, यूनियन व पुलिस में बनी सहमति

पुलिस सख्त: बाजार में गई ई-रिक्शा तो कटेगा चालान

ई-रिक्शा के बनेंगे स्टैंड, आज करवाई जाएगी मुनादी : रामनिवास

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

अब यातायात पुलिस व शहर थाना पुलिस ने शहर में बढ़ती ई- रिक्शा व ऑटो की भीड़ से बचने का नया नुक्ता निकाला है। अब बाजारों में ई-रिक्शा गई तो उसका चालान काटा जाएगा। साथ ही जुर्माना भी लगाने की योजना है। हालांकि बुधवार तक पुलिस प्रशासन ने ई-रिक्शा संचालकों को मोहल्लत दी है,लेकिन उसके बाद किसी भी बाजार में ई-रिक्शा गई तो उनके चालान कटने लाजिमी है। शहर व बाजार से सामान लाने के लिए ई-रिक्शा के लिए बाजार के साथ लगती गली व सड़कों पर अलग से स्टेंड बनाया जाएगा। ताकि हर व्यक्ति उसी जगह से ई रिक्शा या ऑटो ले सके। उक्त बातों को लेकर पुलिस प्रशासन व शनिवार को ऑटो यूनियन के पदाधिकारियों के साथ करीब एक घंटे तक मीटिंग चली। इस दौरान यूनियन के पदाधिकारियों ने बैठक में लिए गए फैसले व सुझावों पर अमल किए जाने का भरोसा दिलाया है। दूसरी तरफ यूनियन के प्रधान रामनिवास शर्मा ने बताया कि मीटिंग में जो फैसले व नियम बनाए गए है। उस बारे में जानकारी देने के लिए रविवार को शहर में मुनादि करवाई जाएगी और फैसलों के बारे में जानकारी दी जाएगी। ताकि शहर की सड़कों पर बेतरीब ढंग से खड़ी होने वाली ई-रिक्शा व जाम की स्थिति से छुटकारा मिल सके। प्रधान रामनिवास शर्मा ने बताया कि वे पुलिस प्रशासन का पूरा सहयोग करेंगे। ताकि शहर के बाजारों में लगने वाले जाम से मुक्ति मिल सके।

भिवानी। ऑटो एवं ई रिक्शा यूनियन के पदाधिकारियों को दिशा निर्देश देते शहर थाना प्रभारी व यातायात प्रभारी। *फोटो : हरिभूमि*

> यूनियन के पदाधिकारियों ने बैठक में लिए गए फैसले व सुझावों पर अमल किए जाने का भरोसा दिलाया

दुकानदारों को भी किया जाएगा आगाह

आयोजित बैठक में ई रिक्शा के बाजारों में घुसने पर लगाम कसने के साथ साथ बाजारों में दुकानदारों द्वारा दुकानों के बाहर सामान रखने पर भी कड़ा संज्ञान लेने का फैसला लिया गया है। इस दौरान यह फैसला लिया गया है कि पहले इस तरह के दुकानदारों को सामान दुकान के बाहर न रखने के प्रति आगाह किया जाएगा। अगर उसके बाद भी दुकानदार अपनी हरकतों से बाज नहीं आता तो नगरपरिषद के साथ मिलकर दुकानों के आगे रखे सामान को जब्त करवाया जाएगा और उनके चालान भी काटे जाएंगे। ताकि बाजार के तंग होते रास्तों को चौड़ा रखा जा सके। यहां यह बताते चले कि शहर के अनेक जगहों पर दुकानदार दुकानों के आगे सामान रख लेते है। जिससे बाजार के रास्ते तंग हो जाते है। अगर सामान बाहर नहीं रखा जाए तो रास्तों की चौड़ाई पूरी होने के बाद जाम की स्थिति नहीं बन पाएगी।

बुधवार के बाद होगी कार्रवाई : एसएचओ

यातायात पुलिस के एसएचओ संजय कुमार ने बताया कि आज ई-रिक्शा व ऑटो यूनियन के पदाधिरियों के साथ मीटिंग की है। उनको बाजार में जाने पर बंदिश रहेगी। घंटाघर चौक से आगे बाजार में नहीं जा सकेंगे। दूसरी तरफ जैन चौक से आगे बाजार में नही आ सकेंगे। इनके अलावा हर चौक व चौराहे से करीब 50 मीटर दूरी पर वे सवारी उतार व बैठा सकेंगे। इसके लिए उनको बुधवार तक का समय दिया गया है। इस दौरान उनको समझाया जाएगा और जागरूक भी किया जाएगा। उसके बाद चालान काटने आरंभ किए जाएंगे। साथ ही उन्होंने बताया कि बाजारों में दुकानदार अपनी दुकान के आगे सामान रख लेते है,जिससे रास्ते तंग हो जाते है। उनको पहले समझाया जाएगा। अगर उसके बाद भी नहीं माने तो नप के साथ मिलकर कार्रवाई व सामान जब्त करने की कार्रवाई की जाएगी।

किसानों की मांग को लेकर विधायक से की मुलाकात

बवानीखेड़ा। मांगों को लेकर विधायक को मांगपत्र सौंपते हुए।

- विधायक से कहा कि पानी की निकासी का कार्य युद्ध स्तर पर किऐ जाने की जरूरत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बवानीखेड़ा

किसानों की समस्याओं व मांगों को लेकर किसान सभा के पदाधिकारियों ने विश्राम गृह में विधायक द्वारा लोगों की समस्याएं सुनने को लेकर आयोजित कार्यक्रम में जाकर मुलाकात की। किसान नेता राजेश कुगड ने बताया कि क्षेमा कम्पनी द्वारा भिवानी और दादरी जिला के किसानों का खरीफ फसल 2023 का 350 करोड़ रुपए बीमा क्लेम में की गई फ्राड की न्यायिक जांच हो। कपास की सरकारी खरीद चल रही है परन्तु रेवेन्यु विभाग द्वारा मेरी फसल मेरा ब्योरा पर वेरीफिकेशन नहीं किए जाने के कारण किसान ब्ब पर अपनी फसल नहीं बेच पा रहे है। अतिवृष्टी के कारण हुई जल भराव क्षेत्र से जल की निकासी बड़ी धीमी रही है। बचे हुए पानी की निकासी का कार्य युद्ध स्तर पर किऐ जाने की जरूरत है। गाँव के जिन किसानो की जमीन बुआई में नही आई उसकी विशेष गिरदावरी करवाकर पचास हजार रुपए प्रति एकड़ दिया जाए। गेहूं की बिजाई चल रही परन्तु डीएपी खाद की बड़ी किलत है। प्राइवेट दुकानों पर डीएपी के साथ अन्य अनाप-शनाप चीजें जबरदस्ती थोपी जा रही है। भविष्य के लिए डीएपी और यूरिया की डिमांड संबंधित अधिकारियों को भेजी जाए।

महापंचायत में पहुंचने की अपील

किसान सभा बवानी खेड़ा के पदाधिकारी तहसील प्रधान राजेश कुगड, सचिव रामोतार भाकर, वित सचिव हरफूल कदावला, उपप्रधान वेद प्रकाश खेड़ी, मास्टर हनुमान रोहिला, सुधीर सागवान, अनुप शर्मा, रामधारी यादव ने बवानी खेड़ा शहर में आने वाली 28 नवम्बर को होनी वाली लोहारु किसान महापचायत के लिए जन अभियान चलाकर लोहारु महापंचायत में पहुंचने की अपील की।

बाढ़ड़ा। कस्बे के गांव जगरामबास के मैन रास्ते में भरा दूषित पानी।

गांव जगरामबास के मुख्य मार्ग में भरा दूषित

बाढ़ड़ा। गांव जगरामबास के मुख्य मार्ग पर दूषित पानी भरा होने के कारण ग्रामीणों व राहगीरों को आवागमन में काफी परेशानी उठानी पड़ रही है। नालियों के पानी की निकासी नहीं होने के कारण सारा पानी मुख्य मार्ग पर भरा रहता है। ग्रामीणों की ओर से अधिकारियों एवं ग्राम पंचायत को शिकायत करने के बावजूद कोई समाधान नहीं हो रहा है। गांव जगरामबास में नालियों के पानी निकासी नहीं होने के कारण सारा पानी मुख्य मार्ग पर भरा रहता है, जिसके चलते लोगों का रास्ते से निकलना मुश्किल हो गया है। कई दिनों से रास्ते पर दूषित पानी जमा होने के कारण आसपास का माहौल दुर्गंधमय हो गया है, जिसके चलते लोगों का रहना मुश्किल हो गया है। वहीं कई दिनों से रास्ते पर दूषित पानी भरा होने के कारण बीमारियां फैलाने वाले मच्छर-मक्खी पैदा हो रहे हैं, जिसके चलते लोगों में बीमारियां फैलने का भय बना हुआ है। ग्रामीण संदीप, प्रदीप, भुपेंद्र, विकास, सुखबीर आदि ने समस्या का समाधान कराने की मांग की है। उन्होंने कहा कि समस्या को लेकर कई बार विभाग व प्रशायन के अधिकारियों को अवगत करा चुके, लेकिन कोई समाधान न होने से ग्रामीणों में रोष बना हुआ हैं।

पूर्व कैबिनेट मंत्री जेपी दलाल ने किया लोहारू हलके के कई गांवों का दौरा

- 25 नवंबर को प्रधानमंत्री कुरुक्षेत्र के गीता महोत्सव कार्यक्रम में करेंगे शिरकत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ लोहारू

पूर्व कृषि मंत्री जेपी दलाल ने शनिवार को क्षेत्र के गांव कुड़ल, लोहारू, फरटिया भीमा, बिसलवास,गोठड़ा,पहाड़ी बडदू सहित लोहारू हलके के अनेक गांवों का दौरा किया और अनेक विवाह समारोह में शिरकत की। इस दौरान पूर्व मंत्री जेपी दलाल ने लोगों से विभिन्न विषयों पर चर्चा की तथा आगामी 25 नवंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुरुक्षेत्र दौरे के बारे में भी बताया। कृषि मंत्री जेपी दलाल ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 25 नवंबर को कुरुक्षेत्र में हरियाणा आने का कार्यक्रम प्रस्तावित है तथा प्रधानमंत्री कुरुक्षेत्र के अंतर्राष्ट्रीय गीता जयंती समारोह में शामिल होकर हजारों करोड रुपए की विकास परियोजनाओं का शुभारंभ करेंगे। इससे हरियाणा के नॉन स्टॉप विकास को और अधिक गति मिलेगी तथा प्रदेश में विकास के नए आयाम स्थापित होंगे। पूर्व कृषि मंत्री जेपी दलाल ने कहा कि युवा पीढ़ी को शिक्षा के साथ-साथ भारतीय सभ्यता और संस्कृति जो की बहुत समृद्ध है, की जानकारी और संस्कार लेने चाहिए।

लोहारू। आयोजित कार्यक्रम में लोगों से मुलाकात करते पूर्व मंत्री जेपी दलाल।

न्यूज डायरी

लक्ष्य निर्धारण कर आगे बढ़े विद्यार्थी: गोयल

भिवानी। आज का युग केवल ज्ञान प्राप्त करने का नहीं, बल्कि ज्ञान को नए रूप में बदलने और समाज के लिए उपयोगी समाधान तैयार करने का है। विद्यार्थियों को चाहिए कि वो इस फेस्ट के माध्यम से अपनी क्षमता को पहचान व निखारकर अपना लक्ष्य निर्धारण कर आगे बढ़े यह बात वैश्य महाविद्यालय भिवानी के भौतिकी विभाग द्वारा आयोजित टैलेंट एंड इनोवेशन फेस्ट के विजेता प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए वैश्य महाविद्यालय भिवानी के प्राचार्य डॉ संजय गोयल ने कही। आज वैश्य महाविद्यालय भिवानी के भौतिकी विभाग द्वारा टैलेंट एंड इनोवेशन फेस्ट का आयोजन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ संजय गोयल के सानिध्य एवं भौतिकी विभाग की विभागाध्यक्ष मधु गुप्ता के दिशा निर्देशन में भौतिकी विभाग में किया गया।

ध्रुव ने लॉन टेनिस के मैनस डबल्स का खिताब जीता

भिवानी। राष्ट्रीय स्तर के लॉन टेनिस टूर्नामेंट में गांव धनाना निवासी 18 वर्षीय खिलाड़ी ध्रुव घणघस ने शानदार प्रदर्शन कर मैनस डबल्स का खिताब जीत लिया है। घणघस गांव धनाना के पूर्व सरपंच जगदीश धनाना के पौत्र हैं, उनके परिवार और गांव में जीत के बाद जश्न का माहौल है। ध्रुव ने अपने जोड़ीदार निखिल डिसूजा हैदराबाद के साथ मिलकर ऑल इंडिया लॉन टेनिस एसोसिएशन द्वारा नोएडा में 17 से 22 नवंबर तक आयोजित नेशनल मैनस टेनिस टूर्नामेंट के फाइनल मुकाबले में जीत दर्ज की।

सहजमानपुर में नहीं होगा मृत्युभोज कार्यक्रम

बहल। बहल के सिरसी रोड़ स्थित ढाणी सहजमानपुर में शनिवार को ग्राम सभा सेवा समिति की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई, जिसमें ग्रामीणों ने सामाजिक सुधार की दिशा में ऐतिहासिक फैसला लिया। बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि भविष्य में गांव में किसी भी प्रकार का मृत्युभोज आयोजित नहीं किया जाएगा। ग्राम सभा के निर्णय के अनुसार यदि कोई भी व्यक्ति इस फैसले का उल्लंघन करता है तो गांव का कोई भी सदस्य उसके मृत्युभोज में शामिल नहीं होगा। इतना ही नहीं, ग्रामवासियों ने यह भी सामूहिक रूप से तय किया कि वे आसपास के गांवों या रिश्तेदारी में आयोजित मृत्युभोज में भी भाग नहीं लेंगे।

चार श्रम संहिताओं को लागू करने का विरोध

भिवानी। केंद्र सरकार द्वारा देश की चार श्रम संहिताओं (लेबर कोड्स) को अचानक लागू किए जाने से देश भर के मजदूरों के भविष्य पर चिंता के बादल छा गए हैं। युवा कांग्रेस प्रदेश महासचिव अधिवक्ता विकास कुमार ने इस कदम को श्रमिकों के संवैधानिक अधिकारों पर सीधा प्रहार बताते हुए इसकी तुलना पहले थोपे गए काले कृषि कानूनों से की है। उन्होंने कहा कि संहिताएं बिना आवश्यक ढ़ांचे (नियम, प्रवर्तन अधिकारी, ट्रिब्यूनल) के लागू की गई हैं, जो पूरी प्रक्रिया को श्रमिकों के अधिकारों को कुचलने वाला बना सकती हैं। अधिवक्ता विकास कुमार ने कहा कि इन संहिताओं को लागू करने का तरीका मजदूरों के हितों के खिलाफ़ है।

पीएम की कुरुक्षेत्र रैली होगी मील का पत्थर साबित

बहल। पूर्व कृषि मंत्री जेपी दलाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का 25 नवंबर का कुरुक्षेत्र दौरा प्रदेश के विकास में मील का पत्थर साबित होगा। पीएम के दौरे से प्रदेश के नॉन स्टाप विकास को गति मिलेगी और प्रदेश को हजारों करोड़ रुपये की विकास योजनाओं की सौगात मिलेगी। उन्होंने कहा कि हरियाणा की भूमि पर भगवान श्री कृष्ण ने गीता का उपेदश दिया था। पीएम भी गीता का संदेश घर घर तक पहुंचाने के लिए हरियाणा आ रहे हैं। वे शनिवार को बहल में शादी कार्यक्रम में शरीक होने के बाद लोगों से बीच बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि देश की प्रगति में युवाओं का विशेष योगदान होता है। हमारा देश युवाओं का देश है।

खेलकूद राष्ट्रीय स्कूली एथलेटिक्स प्रतियोगिता 26 से भिवानी में की जाएंगी आयोजित

स्कूली स्तर की प्रतियोगिता में 1800 बच्चे करेंगे प्रतिभा का प्रदर्शन : डीईओ

राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिता की मेजबानी के लिए भिवानी, डीईओ ने दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

खेल नगरी भिवानी को 26 से 30 नवंबर तक आयोजित होने वाली राष्ट्रीय स्तरीय स्कूली खेल प्रतियोगिता (एथलेटिक्स) की मेजबानी करने का गौरव प्राप्त हुआ है। भीम स्टेडियम में होने वाले इस प्रतिष्ठित आयोजन की सफलता सुनिश्चित करने के लिए भिवानी की जिला शिक्षा अधिकारी डा. निर्मल दहिया ने शनिवार को राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में एक महत्वपूर्ण बैठक की। बैठक में प्रतियोगिता के आयोजन ड्यूटी में लगे कन्वीनर, लाईजनिंग ऑफिसर और अन्य संबंधित अधिकारियों ने भाग लिया, जहां डीईओ ने आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए। यह जानकारी देते हुए कोच सत्यवान व पीटीआई विनोद पिंकू ने बताया कि बैठक की अध्यक्षता उप जिला शिक्षा अधिकारी शिव कुमार तंवर ने की तथा मंच संचालन देवेंद्र अत्री ने किया।

भिवानी। राष्ट्रीय स्तर के खेलों के आयोजन को लेकर आयोजित बैठक में दिशा निर्देश देती जिला शिक्षा अधिकारी निर्मल दहिया। फोटो : हरिभूमि

फिर से मिलेगा राष्ट्रीय स्तर पर मौका

डीईओ डा. निर्मल दहिया ने कहा कि भिवानी को राष्ट्रीय स्तर की इस प्रतियोगिता की मेजबानी का मौका मिला है, जिसे सफल बनाना हम सबकी जिम्मेदारी है। डीईओ ने खिलाडियों के रहने, खाने, स्टेज संचालन, स्वागत कमेटी, और स्टेशन/बस स्टैंड से खिलाडियों को रिसीव करने वाली कमेटियों को विशेष निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि खिलाडियों के ठहरने की व्यवस्था रोहतक रोड पर स्थित राधा स्वामी सत्संग भवन में की जाएगी।

व्यवस्था जिला स्तर पर सुनिश्चित की जाएंगी

जिला शिक्षा अधिकारी निर्मल दहिया ने बताया कि यह प्रतियोगिता अत्यंत व्यापक होगी। इसमें देश भर से लगभग 1800 बच्चे भाग लेंगे। डीईओ ने स्पष्ट किया कि इन सभी खिलाडियों के रहने और खाने की सारी व्यवस्था जिला स्तर पर सुनिश्चित की जाएगी। बैठक को इस अवसर पर कोच सत्यवान, डा. अनिल कुमार, खंड शिक्षा अधिकारी कैरू महेंद्र सिंह गिल, खंड शिक्षा अधिकारी सिवानी डा. सुरेंद्र कुमार, आनंद शर्मा बवानीखेड़ा आदि रहे।

गोल्ड लीजिंग, जिसके जरिए आजकल लोग कर रहे कमाई
क्या हैं फायदे और नुकसान

आजकल कई लोग ऐसे हैं जो गोल्ड लीजिंग के जरिए काफी अच्छी कमाई कर रहे हैं. अब यह गोल्ड लीजिंग क्या है? आज हम आपको इसी के बारे में बताने वाले हैं. साथ में गोल्ड लीजिंग के फायदे और नुकसान के बारे में भी बताने वाले हैं।

हर व्यक्ति चाहता है, कि उसके पास ज्यादा पैसा हो और उसे पैसों की कभी कमी न हो। इसके लिए लोग कमाई करने के साथ साथ अपने पैसों को निवेश करते हैं। इसके अलावा आजकल लोग अपनी तिजोरी में रखें हुए सोने से भी कमाई कर रहे हैं। जी हां, हम बात कर रहे हैं गोल्ड लीजिंग की। आजकल कई लोग ऐसे हैं जो गोल्ड लीजिंग के जरिए काफी अच्छी कमाई कर रहे हैं। अब यह गोल्ड लीजिंग क्या है? आज हम आपको इसी के बारे में बताने वाले हैं। साथ में गोल्ड लीजिंग के फायदे और नुकसान के बारे में भी बताने वाले हैं।

गोल्ड लीजिंग क्या होता है ?

गोल्ड लीजिंग को आसान शब्दों में समझें तो गोल्ड लीजिंग में आप अपने सोने को किराए पर देते हैं और कमाई कर लेते हैं। आजकल कई डिजिटल प्लेटफॉर्म लोगों को गोल्ड लीजिंग की सुविधा ऑफर कर रहे हैं। इन प्लेटफॉर्म के जरिए लोग अपने गोल्ड को किराए पर दे सकते हैं और कमाई कर सकते हैं। गोल्ड लीजिंग में आप एक निश्चित समय के लिए अपने गोल्ड को लीज या किराए पर देते हैं। इसके बदले में आपको 2 से 7 प्रतिशत तक रिटर्न मिलता है। अब खास बात यह है कि गोल्ड लीजिंग में मिलने वाला रिटर्न आपको गोल्ड के रूप में भी मिल सकता है और यह कैश में भी हो सकता है। वहीं अगर सोने का भाव बढ़ता है, तो आपका रिटर्न भी बढ़ता है।

गोल्ड लीजिंग के फायदे-नुकसान

गोल्ड लीजिंग में अगर सोने की कीमतें बढ़ती हैं तो आपको ही फायदा होगा लेकिन सोने की कीमत गिरने पर आपका रिटर्म कम हो सकता है। गोल्ड लीजिंग के जरिए आप अपने तिजोरी में रखे सोने के जरिए काफी अच्छी कमाई कर सकते हैं लेकिन गोल्ड लीजिंग एक नया ट्रेंड है। ऐसे में इसके लिए अभी नियम पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है। वहीं कई मामलों में निवेशक के साथ फ्रॉड भी हो सकता है। इसके अलावा अगर आप गोल्ड लीजिंग की अवधि के बीच में अपना सोना वापस चाहते हैं, तो सोना वापस लेना थोड़ा मुश्किल हो सकता है।

बच्चे के जन्म से शुरू करें निवेश, 18 साल होने पर तैयार होगा 50 लाख का फंड

पढ़ाई से लेकर शादी तक, सबका खर्च बढ़ रहा है खर्च, क्या आप अपने बच्चे के भविष्य निर्माण के लिए तैयार हैं? यह सवाल इसलिए क्योंकि घर में बच्चे सबको प्रिय होते हैं। लेकिन बच्चों के सपनों को साकार करने के लिए बच्चे का आर्थिक भविष्य संवारने का काम सभी नहीं करते।

आमतौर पर देखा जाता है कि माता-पिता अपने बच्चों की पढ़ाई या शादी जैसे लंबे लक्ष्यों के लिए उनके नाम पर ही एक अलग फंड बनाना पसंद करते हैं। यह फंड अक्सर जन्मदिन या खास मौकों पर मिली छोटी-छोटी रकम से शुरू होता है और फिर माता-पिता समय-समय पर इसमें नियमित रूप से पैसा जोड़ते रहते हैं। विशेषज्ञ भी इसे अच्छा तरीका मानते हैं। आज हम आपको बता रहे हैं म्यूचुअल फंड में चिल्ड्रेन फंड के बारे में।

- **बच्चे की पढ़ाई और शादी की चिंता रहेगी दूर**
- **भविष्य में अच्छे बिजनेस करने के लिए भी मिलेगा पैसा**

निवेश का भरोसेमंद तरीका

चिल्ड्रन म्यूचुअल फंड के क्षेत्र में उदाहरण के लिए हम आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल चिल्ड्रन फंड को देखते हैं। यह एक ऐसी योजना है जिसका लंबा और भरोसेमंद रिकॉर्ड रहा है। इसने समय के साथ अच्छे रिटर्न दिए हैं। यह एक ओपन-एंडेड निवेश योजना है जो बच्चों के लिए बनाई गई है। इसमें कम से कम पांच साल का लॉक-इन होता है, या फिर जब बच्चा बालिग हो जाए, जैसा भी पहले हो। यह फंड इक्विटी और डेट दोनों प्रकार की संपत्तियों में निवेश करता है और जरूरत पड़ने पर बेंचमार्क से बाहर के विषयों में भी अवसर के अनुसार निवेश करने का फ्रीडम रखता है।

उतार-चढ़ाव का असर भी कुछ हद तक कम होता

इस योजना की खासियत इसका बदलते हालात के मुताबिक ढलने वाला निवेश तरीका है। यह किसी एक तय निवेश फॉर्मूले पर अडिग नहीं रहती, बल्कि बाजार की स्थिति के अनुसार कभी बचाव की मुद्रा में तो कभी आक्रामक रुख अपनाती है। इससे फंड मैनेजर को समय-समय पर आर्थिक माहौल के हिसाब से उलट दिशा में भी कदम उठाने का अवसर मिलता है, जिससे पोर्टफोलियो में एक लचीलापन और जीवंतता बनी रहती है।

बाजार के हिसाब से होता है काम

जब बाजार में स्थिरता की जरूरत हो, तो यह फंड अपनी हिस्सेदारी का करीब 35% तक डेट में ले जा सकता है। और जब माहौल अनुकूल हो, तो उसी तेजी से फिर इक्विटी में लौट भी सकता है। इससे एक तरफ बढ़त के अवसरों का लाभ मिलता है और दूसरी तरफ अनिश्चित समय में उतार-चढ़ाव का असर भी कुछ हद तक कम होता है। कुल मिलाकर, यह चिल्ड्रन फंड उन अभिभावकों के लिए एक बेहतर विकल्प बनकर उभरता है जो अपने बच्चों की निवेश योजना में लचीलापन, सक्रिय फैसले और लंबी अवधि की सोच इन तीनों का संतुलित मेल चाहते हैं।

क्या है रिटर्न

अगर कोई व्यक्ति 31 अगस्त 2001 को आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल चिल्ड्रन फंड में 10 लाख रुपये निवेश किया होता तो 31 अक्टूबर 2025 तक यह राशि बढ़कर लगभग 3.3 करोड़ रुपये हो जाती। यह 15.58% की उल्लेखनीय वार्षिक कंपाउंडेड वृद्धि है। इसकी तुलना में, बेंचमार्क में ऐसा ही निवेश करीब 2.12 करोड़ का होता। यानी सीएजीआर 13.46 पर्सेंट का रिटर्न मिला है। इस फंड के एसआईपी रिटर्न भी कमाल के रहे हैं। अगर शुरुआत से हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी की जाती, तो कुल 29 लाख का निवेश 31 अक्टूबर, 2025 तक 2.2 करोड़ रुपये का हो जाता। अगर पिछले 15 साल से निवेश किया जा रहा है तो 18 लाख का योगदान बढ़कर 55.4 लाख रुपये तक पहुंच जाता। इसका मतलब 13.76 फीसदी सीएजीआर की दर से रिटर्न मिला। इसी अवधि में इसके बेंचमार्क का रिटर्न केवल 11.88 फीसदी है। पिछले एक, तीन और पांच साल में भी फंड ने लगातार अपने बेंचमार्क से बेहतर प्रदर्शन किया है।

जल्दी निवेश करना क्यों है जरूरी

मान लीजिए कि किसी अभिभावक को अपने बच्चे के 18 साल का होने तक 50 लाख रुपये का कोर्पस तैयार करना है। अगर पहले माता-पिता (ए) ने बच्चे के जन्म के समय ही निवेश शुरू किया, तो 18 साल की अवधि में 12% की मान्य वृद्धि दर पर उन्हें हर महीने 6,598 रुपये निवेश करने होंगे। कुल मिलाकर 14.25 लाख रुपये का योगदान करना पड़ेगा। अगर दूसरे माता-पिता (बी) ने बच्चे के छह साल का होने पर निवेश शुरू किया, तो 12 साल की अवधि में उन्हें हर महीने 15671 रुपये लगाने होंगे। कुल योगदान 22.56 लाख रुपये का हो जाएगा। अगर तीसरे माता-पिता (सी) ने निवेश तब शुरू किया जब बच्चा 12 साल का हुआ, तो 12% की वृद्धि दर पर उन्हें हर महीने 47,751 रुपये लगाने होंगे और कुल योगदान 34.38 लाख रुपये तक पहुंच जाएगा। यानी लक्ष्य एक ही हो लेकिन देरी करने वालों को कहीं ज्यादा कीमत चुकानी पड़ती है। माता-पिता बी को ए की तुलना में 12.3 लाख और सी को 20.13 लाख रुपये अधिक निवेश करने पड़ेंगे। यही है निवेश में देरी की वास्तविक लागत। अंत में, बात फिर वहीं आती है। निवेश जितना जल्दी शुरू होगा, लंबे समय वाले इक्विटी निवेश की शक्ति उतनी ही प्रभावी होगी। माता-पिता चाहें तो बहुत सधी हुई रफ्तार से बच्चे के सपनों जैसा उज्ज्वल भविष्य गढ़ सकते हैं।

हर माह 10,000 रुपये की बचत, बच्चों के लिए बनाएं 43 लाख का फंड

पब्लिक प्रोविडेंट फंड यानी पीपीएफ स्कीम और सुकन्या समृद्धि योजना यानी एसएसवाई स्कीम में आप हर साल थोड़ा थोड़ा निवेश कर लाखों का फंड बना सकते हैं। दोनों स्कीम में आपको 15 सालों तक अपने निवेश को जारी रखना होता है। आइए जानते हैं...

पैसों को एक अच्छी स्कीम में निवेश करना हर व्यक्ति के लिए जरूरी होता है। हर व्यक्ति को अपनी मंथली इनकम का कुछ हिस्सा एक अच्छी स्कीम में निवेश जरूर करना चाहिए, जिससे वह अपने बच्चों के भविष्य को सुरक्षित कर सकें। ऐसी कई स्कीम और योजनाएं हैं, जहां आप अपने पैसों को सुरक्षित निवेश कर सकते हैं और लाखों का रिटर्न पा सकते हैं। आज हम आपको दो ऐसी स्कीम में बारे में बताएंगे, जिसमें आप हर महीने केवल 10,000 रुपये निवेश कर पूरे 43 लाख रुपये से ज्यादा का फंड बना सकते हैं। यह दोनों स्कीम सरकारी स्कीम है। ऐसे में यहां आपका पैसा भी सुरक्षित रहेगा। हम बात कर रहे हैं पब्लिक प्रोविडेंट फंड यानी पीपीएफ स्कीम और सुकन्या समृद्धि योजना यानी एसएसवाई स्कीम के बारे में. दोनों ही स्कीम में आप हर साल थोड़ा थोड़ा निवेश कर सकते हैं और दोनों स्कीम में आपको 15 सालों तक अपने निवेश को जारी रखना होता है।

पीपीएफ और एसएसवाई में रिटर्न

पीपीएफ में 7.1 प्रतिशत की दर से रिटर्न मिलता है और एसएसवाई में 8.2 प्रतिशत की दर से रिटर्न मिलता है। पीपीएफ में कोई भी व्यक्ति निवेश कर सकता है लेकिन एसएसवाई में केवल माता-पिता अपना 10 साल से कम उम्र की बेटी के नाम पर निवेश कर सकते हैं। दोनों ही स्कीम में 1000 रुपये से 1.50 लाख रुपये प्रति वर्ष निवेश किया जा सकता है।

ऐसे बढ़ेगा आपका फंड

अगर आप हर महीने 10,000 रुपये की बचत कर 5-5 हजार रुपये दोनों स्कीम में 15 सालों तक निवेश करते हैं तो आप 43 लाख रुपये से ज्यादा का फंड बना सकते हैं। हर महीने 5000 रुपये अगर आप पूरे 15 सालों तक पीपीएफ में निवेश करते हैं तो आप 15 सालों में कुल 9 लाख रुपये निवेश करेंगे। 15 साल बाद आपको कुल 16.27 लाख रुपये मिलेंगे। ऐसे में आपको 7.27 लाख रुपये का लाभ होगा। हर महीने 5000 रुपये अगर आप पूरे 15 सालों तक एसएसवाई में निवेश करते हैं तो आप 15 सालों में कुल 27.71 लाख रुपये मिलेंगे। ऐसे में आपको 18.71 लाख रुपये का लाभ होगा। इस तरह से आप 15 साल में कुल 43.98 लाख रुपये का फंड बना सकते हैं।

जॉइंट फैमिली खत्म, अब बुढ़ापे में कौन देगा सहारा? मिडिल क्लास की सबसे बड़ी टेंशन पर अलर्ट

योजना बनाने में देरी से रिटायरमेंट के लिए पर्याप्त धन नहीं हो पाता जमा जिससे भविष्य हो जाता है अनिश्चित

भारत में रिटायरमेंट का संकट गहरा रहा है, क्योंकि पुरानी व्यवस्थाएं अब पर्याप्त नहीं हैं। बढ़ती उम्र, स्वास्थ्य खर्च और सामाजिक सुरक्षा की कमी के कारण 70% से अधिक वरिष्ठ नागरिक परिवार पर निर्भर हैं। योजना बनाने में देरी से रिटायरमेंट के लिए पर्याप्त धन जमा नहीं हो पाता, जिससे भविष्य अनिश्चित हो जाता है।

नई दिल्ली: भारत में रिटायरमेंट का संकट अब आने वाला नहीं है, बल्कि यह पहले से ही मौजूद है। ज्यादातर भारतीय परिवार इसके लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं हैं। वेल्थ एडवाइजर नितिन पुष्करन ने इसे लेकर लिंक्डइन पर एक पोस्ट में चेतावनी दी है। उनके मुताबिक, बच्चों का सहारा, पेंशन या प्रॉपर्टी जैसी पुरानी व्यवस्थाएं अब रिटायरमेंट को सुरक्षित करने के लिए काफी नहीं हैं। पुष्करन ने लिखा, 'हम संयुक्त परिवार वाली व्यवस्था से निकलकर एकल आय वाली अर्थव्यवस्था में आ गए हैं।' उन्होंने बताया कि बढ़ती उम्र, स्वास्थ्य सेवाओं पर भारी खर्च और सामाजिक सुरक्षा की कमी ने मिलकर देश में एक बड़ा आर्थिक संकट पैदा कर दिया है। पेंशन फंड रेगुलेटरी एंड डेवलपमेंट अथॉरिटी (पीएफआरडीए) और भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के आंकड़ों के अनुसार, 60 साल से ज्यादा उम्र के 70% से अधिक भारतीय पूरी तरह से अपने परिवार पर निर्भर हैं। वहीं, 10% से भी कम लोग ईपीएफ, एनपीएस या सुपरएन्युएशन जैसी किसी भी रिटायरमेंट स्कीम में नियमित रूप से पैसा जमा करते हैं।

क्या फेल होती है रिटायरमेंट प्लानिंग?

पुष्करन ने इस बात पर जोर दिया कि रिटायरमेंट में असफलता का कारण आय की कमी नहीं, बल्कि योजना बनाने में देरी है। उन्होंने एक उदाहरण दिया कि अगर कोई 35 साल का व्यक्ति आज से 10,000 रुपये हर महीने एसआईपी में लगाना शुरू करे तो 60 साल की उम्र तक उसके पास 1 करोड़ रुपये से ज्यादा जमा हो जाएंगे।

संकट बढ़ाने वाले कई और कारण

इस संकट को बढ़ाने वाले कुछ और कारण भी हैं। स्वास्थ्य सेवाओं पर होने वाला खर्च 11-14% तक है, जो दुनिया में सबसे ज्यादा में से एक है। साथ ही, लोगों की औसत उम्र भी 70 साल से ज्यादा हो गई है। पुष्करन ने यह भी बताया कि नौकरी के बीच में ईपीएफ से पैसे निकालना भी एक बड़ी वजह है, जिससे कई नौकरीपेशा लोगों का रिटायरमेंट के लिए जमा होने वाला एकमात्र जरिया खत्म हो जाता है। भारत लौटने वाले एनआरआई (अनिवासी भारतीय) भी अक्सर रिटायरमेंट के बाद के खर्चों का सही अंदाजा नहीं लगा पाते। उनकी सलाह सीधी और स्पष्ट है, 'रिटायरमेंट के लिए पहली प्राथमिकता से योजना बनाएं, बची हुई रकम से नहीं। आपकी भविष्य की जीवनशैली आपके बच्चों या ईएमआई पर निर्भर नहीं होनी चाहिए।'

लॉन्ग टर्म एसआईपी करोड़पति तो बना देगी, लेकिन उस पर टैक्स कितना भरना पड़ेगा?

एक्सपर्ट्स की राय
बिजनेस डेस्क

एसआईपी में निवेश करके लॉन्ग टर्म में करोड़ों का फंड बनाया जा सकता है। आजकल वित्तीय एक्सपर्ट्स भी एसआईपी में निवेश करने की सलाह देते हैं। निवेशकों के साथ ही सोशल मीडिया पर भी एसआईपी में निवेश करने के फायदे गिनाए जाते हैं। यह सुनकर तो बहुत अच्छा लगता है कि 20-25 साल लगातार एसआईपी में निवेश करने के बाद आपके पास करोड़ों रुपए का फंड जमा हो जाएगा, आप करोड़पति बन जाएंगे। लेकिन आपको यह नहीं बताया जाता है कि एसआईपी रिटर्न जब आपको मिलेगा तब आपको कितना टैक्स भरना पड़ेगा। लॉन्ग टर्म में कमाई गई आई पर आपको टैक्स का भुगतान करना पड़ेगा जिससे आपका रिटर्न कम हो जाएगा।

रिटर्न के साथ टैक्स का भुगतान

लंबे समय के बाद आप यदि एसआईपी पर भारी भरकम मुनाफा कमाते हैं तो उस पर आपको टैक्स का भुगतान करना ही पड़ेगा। इसीलिए आपको पहले ही समझ जाना चाहिए की लॉन्ग टर्म कैपिटल गैन टैक्स सिस्टम के अंतर्गत एसआईपी रिटर्न पर आपको कितना टैक्स देना पड़ेगा और कितना रिटर्न आपको मिल सकता है।

उदाहरण से समझिये पूरा गणित

मान लेते हैं कि आप हर महीने 15000 एसआईपी में निवेश करते हैं। यह एसआईपी लगातार 20 साल तक जारी रखी जाती है। और यदि इस पर आपको 12% की दर से औसतन रिटर्न भी मिले तो 20 साल बाद मिलने वाला ब्याज सहित कुल रिटर्न 1,49,87,219 हो जाएगा। प्लीज रिटर्न पर आपको लॉन्ग टर्म कैपिटल गैन टैक्स का भुगतान करना होगा। नियम के अनुसार यदि आपका लाभ 1 साल से ज्यादा के निवेश पर 1,25,000 से ज्यादा है तो उस पर आपको 12.5% टैक्स के साथ 4% सेस का भी भुगतान करना पड़ेगा। यानी 1,49,87,219 में से 1,25,000 हटाने के बाद बची राशि पर आपको 12.5% टैक्स और 4% सेस का भुगतान करना पड़ेगा। इसके बाद भी आपको एक करोड़ से ज्यादा का रिटर्न तो मिलेगा ही लेकिन आपका रिटर्न थोड़ा कम हो जाएगा। इसलिए यदि आप लॉन्ग टर्म के लिए एसआईपी कर रहे हैं तो अपनी फाइनेंशियल प्लानिंग में यह भी शामिल करें कि उसे एसआईपी पर आपको बाद में टैक्स का भुगतान भी करना पड़ेगा।

अब इस डिजिटल पेमेंट के तरीके में एक और दमदार ट्विस्ट

स्मार्ट होता भारत अब यूपीआई से पा रहा क्रेडिट का फायदा, मिल रहे रिवॉर्ड और कैशबैक भी

सोचिए आप दुकान पर जाएं, यूपीआई से पेमेंट करें और आपका न सिर्फ सेकंड्स में पेमेंट पास हो जाए, बल्कि कैशबैक भी मिल जाए। है ना फायदे का सौदा? ये ही फायदा लेकर आया है कीवी एप , जिससे पेमेंट करना आपको फायदा ही फायदा पहुंचाएगा। क्योंकि इस पर कैशबैक के साथ ही ईएमआई तक की सुविधा का आनंद लिया जा सकता है।

योजना
बिजनेस डेस्क

पैसों से जुड़े लेन-देन के तरीकों की भारत में यात्रा काफी लंबी और रोचक रही है। पहले जहां लोग जेब में कैश या चेक लेकर घूमते थे, तो वहीं बाद में इसकी जगह डेबिट/क्रेडिट काड्र्स ने ले ली। और फिर आया पेमेंट को सुपर ईजी बना देने वाला बदलाव, यानी यूपीआई क्यू कोड, जिसमें व्यक्ति बस एक स्कैन करता है और महज सेकंड्स में ट्रांजेक्शन पूरा हो जाता है। अब इस डिजिटल पेमेंट के तरीके में एक और दमदार ट्विस्ट आ चुका है। इसमें लोगों को न सिर्फ यूपीआई पेमेंट की रफ्तार और सहूलियत मिल रही है बल्कि वो क्रेडिट की ताकत का फायदा भी उठा रहे हैं। सोचिए कि आप किसी किराना स्टोर में जाएं, वहां पर अपनी रोजाना की चीजें खरीदें और यूपीआई स्कैन से तुरंत पेमेंट कर दें, लेकिन इसके बावजूद आपके सेविंग अकाउंट से एक भी पैसा न कटे! और तो और आपको क्रेडिट कार्ड कैशबैक, रिवॉर्ड पॉइंट्स व बड़ी खरीदारी के भुगतान को ईएमआई में तब्दील करने का विकल्प भी मिल जाए। है ना ये शॉपिंग एक्सपीरियंस में दमदार ट्विस्ट? इसका श्रेय जाता है कीवी जैसे प्लेटफॉर्म को जिसने यूपीआई पेमेंट्स को एप के जरिए क्रेडिट से जोड़ने का काम किया है। यानी अब आप यूपीआई पेमेंट सीधे क्रेडिट कार्ड से कर सकते हैं।

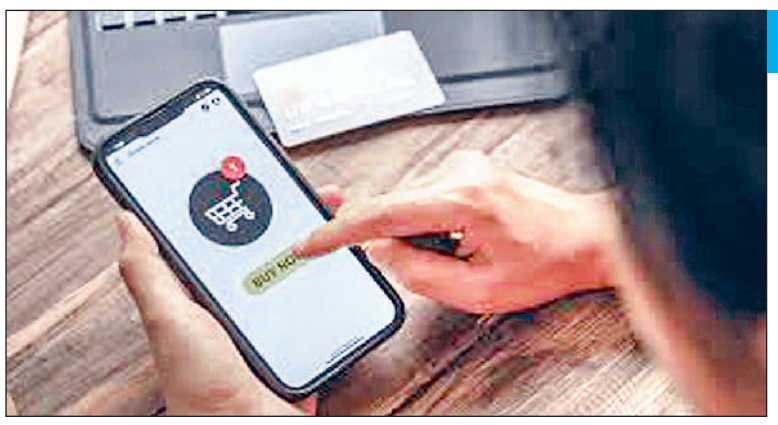

एक स्कैन और बैंक से सीधे कट जाती है राशि

चाहे किताब खरीदनी हो, घर के लिए चावल या फिर वॉशिंग मशीन, सभी तरह की खरीदारी के लिए यूपीआई सबसे आम तरीकों में से एक बन चुका है। एक स्कैन से सारे पेमेंट हो जाते हैं, जिसके लिए बैंक अकाउंट से पैसे कटते हैं। अब इसमें समस्या ये है कि अगर व्यक्ति के खाते में पर्याप्त राशि नहीं हुई, तो पेमेंट अप्रूव नहीं होगा। साथ ही इसमें पूरा भुगतान एकमुश्त ही करना होता है फिर चाहे आप 10 रुपये की चीज खरीद रहे हों या फिर 50,000 रुपये की। इससे जेब पर एकदम से काफी भार भी पड़ता है। लेकिन अगर आपके यूपीआई के साथ क्रेडिट कार्ड की ताकत जुड़ी हो, तो इन चीजों का भार हल्का हो जाता है।

रुपे क्रेडिट कार्ड फॉर यूपीआई के फायदे

- तुरंत और आसान भुगतानः बस स्कैन करें और यूपीआई से भुगतान करें। यानी आपको पेमेंट के लिए न तो अपने साथ क्रेडिट कार्ड कैरी करने की जरूरत है और ना ही वॉलेट में कैश तलाशने की।
- रिवॉर्ड और कैशबैकः यूपीआई पेमेंट करने पर भी कैशबैक और रिवॉर्ड पॉइंट्स जैसे फायदे मिलते हैं, वो भी बिना किसी उलझन भरी शर्तों या छिपे हुए नियमों के।
- बाद में पेमेंट की सुविधाः बड़े अमाउंट को आप आसानी से ईएमआई में तबदील कर सकते हैं, जिससे आपकी जेब पर एकदम से बोझ नहीं आता।

यहां क्रेडिट और यूपीआई चलते हैं साथ-साथ

यूपीआई पर क्रेडिट का फायदा पाने के काम को कीवी ने बेहद आसान बना दिया है। बस आपको कीवी एप पर साझेदार बैंकों द्वारा जारी किए गए पर रुपे क्रेडिट कार्ड को ऐप के जरिए यूपीआई से जोड़ना है, जिसका प्रोसेस काफी आसान है। एक बार ये लिंक हो गया, तो यूजर कीवी एप के जरिए ईजी पेमेंट, रिवॉर्ड्स के साथ ही पेमेंट को ईएमआई में बदलने जैसे कई फायदों का लाभ उठा सकेगा। कीवी एप से हुए यूपीआई पेमेंट्स पर कम से कम 1.5% का कैशबैक मिलता है, जो सीधा बैंक में जाता है, जिसे कभी भी निकालकर इस्तेमाल किया जा सकता है। इसमें न तो कोई छुपी हुई शर्तें हैं और ना ही कोई जटिल कन्वर्जन। और तो और कीवी एप पर उपलब्ध रुपे क्रेडिट कार्ड फॉर यूपीआई पूरी तरह से लाइफटाइम फ्री भी है। कुल मिलाकर ये आज के डिजिटल इंडिया के लिए ही बना है, जो शॉपिंग के एक्सपीरियंस को ईजी और रिवॉर्ड रिच बना देता है।

क्रेडिट-स्मार्ट और सशक्त होता भारत

जैसे-जैसे ज्यादा लोग यूपीआई के जरिए क्रेडिट का इस्तेमाल करने लगे हैं, वैसे-वैसे भारत में पैसे खर्च करने और संभालने का तरीका धीरे-धीरे बदलता जा रहा है। जो लोग अब तक सिर्फ डेबिट कार्ड या नकद पर निर्भर थे, उनके लिए ये बिना किसी झंझट के क्रेडिट की दुनिया में कदम रखने का आसान रास्ता बन गया है। कीवी जैसे प्लेटफॉर्म की पारदर्शी और आसान सेवाओं से भारत में डिजिटल पेमेंट न सिर्फ तेज हो रहे हैं, बल्कि ये लोगों को अधिक सशक्त और क्रेडिट स्मार्ट भी बना रहे हैं, जो नए भारत के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में सक्षम बनाता है।

खबर संक्षेप

फिजिकल साइंस की टॉप-10 सूची पर किया कब्जा

महेंद्रगढ़। इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर रेवाड़ी द्वारा फिजिकल साइंस के द्वितीय सेमेस्टर का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया, जिसमें यदुवंशी कॉलेज के विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय की टॉप-10 सूची में से पांच स्थान पर कब्जा किया, इस परीक्षा परिणाम में तमन्ना पुत्री कृष्ण कुमार ने मैथ ऑनर्स में विश्वविद्यालय की टॉप-10 सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

सड़क सुरक्षा परीक्षा में छात्रा अर्पिता प्रथम

कनीना। मॉडल संस्कृति स्कूल में सड़क सुरक्षा की लिखित परीक्षा आयोजित की गई, जिसमें ब्लॉक के सभी सरकारी-गैर सरकारी स्कूल के बच्चों ने भाग लिया। आरआरसीएम स्कूल कनीना की पांचवी कक्षा की अर्पिता पुत्री अजीत ने प्रथम लेवल की परीक्षा में प्रथम स्थान पाकर अपने स्कूल और माता-पिता का नाम रोशन किया। संस्था चेयरमैन रोशनलाल यादव ने छात्रा को मेडल पहनाकर सम्मानित किया।

एमआर स्कूल में बच्चों ने स्पर्धा में दिखाई प्रतिभा

नारनौल। एमआर पब्लिक स्कूल में चारों सदनों के मध्य नृत्य व संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें चारों सदनों के छात्रों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का उद्देश्य छात्रों को अपनी कला प्रदर्शित करने का मंच प्रदान करना था। कार्यक्रम में विभिन्न पारंपरिक नृत्यों की प्रस्तुतियां दी गई। प्रतियोगिता का शुभारंभ प्राधानाचार्या अनिता यादव ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

कच्चा रास्ता होगा पक्का निर्माण कार्य शुरू

महेंद्रगढ़। मार्केटिंग बोर्ड ने कुराहवटा वाया क्रेशर जोन वाया पांचों पीर जेरपुर का 800 मीटर एरिया के कच्चे रास्ते का निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है। मार्केटिंग बोर्ड की ओर से एक करोड़ 24 लाख रुपये खर्च कर सड़क बनाई जाएंगी। ग्रामीणों ने बताया कि यह रास्ता कुराहवटा वाया क्रेशर जोन वाया पांचों पीर जेरपुर तक जाता है। जिससे इस रास्ते पर दोनों गांव के लोगों का आना जाना हर वक्त लगा रहता है। लेकिन यह रास्ता कच्चा होने के कारण यहां हर वक्त धूल-मिट्टी उड़ती रहती है। जिससे लोगों को यहां से गुजरने में परेशानी उठानी पड़ती है। उन्होंने बताया कि रास्ता कच्चा होने से बरसात के दिनों यहां कीचड़ बनी रही है।

कल राजकीय महाविद्यालय में करेंगी निरीक्षण

महेंद्रगढ़। इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर रेवाड़ी द्वारा राजकीय महाविद्यालय में प्रावधानिक संबद्धता के नवीनीकरण एवं पूर्व निर्धारित मानकों की अनुपालना की जांच के लिए विश्वविद्यालय की तीन सदस्यीय निरीक्षण टीम 24 नवंबर को महाविद्यालय का दौरा करेंगी। इस संबंध में जिला उच्चतर शिक्षा अधिकारी एवं महाविद्यालय प्राचार्या प्रो. डॉ. पूर्ण प्रभा ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा गठित निरीक्षण समिति में इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग समन्वयक प्रो. संजय हुड्डा, गणित विभाग से डॉ. महाबीर बड़क तथा राजनीति विज्ञान विभाग से डॉ. मोनिका यादव शामिल हैं।

कितनी सड़क, कहां और कितनी खराब व सही का सही डाटा सरकार के सामने आएगा

म्हारी सड़क पोर्टल पर नारनौल शहर की सड़कों की होगी डाटा एंट्री, चौदह टीमों ने सर्वे किया शुरू

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

शहर के लोगों के लिए अच्छी खबर है। अगर सर्वे सही और धरातल पर पूरा किया जाता है तो नारनौल शहर में कितनी सड़क हैं। कहां ठीक है और खराब हैं। लंबाई–चौड़ाई और कब बनी, पूरा डाटा ऑनलाइन होने जा रहा है। इसके लिए नगर परिषद ने म्हारी सड़क पोर्टल पर सर्वे अपलोड करना शुरू कर दिया है। बीते एक सप्ताह से शहर में अलग–अलग टीम सर्वे करने में जुटी है। हर सड़क का नंबर आईडी दिया जा रहा है। सर्वे पूरा होने के बाद ऑनलाइन बिना मौके पर जाए यह पता चल जाएगा कि सड़क की फिलहाल स्थिति कैसी है। यह भी तथ्य सामने आ जाएंगे कि शहर में ऐसी कितनी गलियां या रास्ते है जहां सड़क बनाने की जरूरत है। इस सर्वे के बाद सबसे बड़ा भ्रष्टाचार यह रूकेगा कि नगर परिषद के अधिकारी मिलीभगत करके ठेकेदार के मार्फत समय से पहले सड़क उखाड़कर नई नहीं बना सकेंगे। अक्सर यह चर्चा रहती है कि सड़क बिल्कुल ठीक थी, फिर भी उखाड़कर इसे नई बना दी गई। ऐसे आरोपों से अब निजात मिल सकती है।

■ ठेकेदार हो या नगर निकाय के अधिकारी, डीपीएल सूची में शामिल

नारनौल। एम्पलाइज कॉलोनी में सड़क को मापते सर्वे टीम सदस्य। फोटो: हरिभूमि

जानकारी के मुताबिक म्हारी सड़क पोर्टल के माध्यम से पूरे हरियाणा में सर्वे किया जा रहा है। शहर में नगर निकाय यह सर्वे कर रही है तो गांव में बीडीपीओ, मार्केट कमेटी या पीडब्ल्यूडी विभाग, जिसके कार्यक्षेत्र में जो सड़क है, वह उसका धरातल पर जाकर सर्वे करवा रही है। इसी तरह शहर की सड़कों की यथास्थिति जानने के लिए नगर परिषद ने सर्वे आरम्भ कर दिया है। हर सड़क को एक आईडी नंबर दिया जा रहा है। उसमें सड़क किस घर से किस घर तक है, उसका नाम लिखकर फीते से लंबाई–चौड़ाई मापी जा रही है। इससे नगर परिषद को यह भी पता चल जाएगा कि उसके कार्यक्षेत्र में कितनी सड़क है और उसकी कुल लंबाई चौड़ाई क्या है। भविष्य में अगर कोई सड़क निर्माण की डिमांड करता है।

आमजन के लिए यह भी जानना जरूरी

प्रदेश की सड़कों को गड्ढा मुक्त बनाने के लिए सरकार ने कदम उठाया है। इसके लिए 'म्हारी सड़क (हरपथ)' मोबाइल एप्लिकेशन की लॉन्चिंग की गई है। इस ऐप के माध्यम से नागरिक खराब सड़कों, गड्ढों या अन्य सड़क-संबंधी समस्याओं की ऑनलाइन शिकायत दर्ज करा सकेंगे। उपयोगकर्ता अपने स्मार्टफोन से सड़क की तस्वीर और जीपीएस लोकेशन अपलोड कर सीधे सरकार तक जानकारी भेज पाएंगे। शिकायत दर्ज होते ही यह संबंधित विभाग, जैसे लोक निर्माण विभाग तक पहुंच जाएगी। इस ऐप की खासियत यह है कि यह शिकायत को जियो-टैग करता है, जिससे स्थान की सटीक जानकारी मिलती है। नागरिक अपनी शिकायत की स्थिति भी ऐप में ट्रैक कर सकते हैं।

शहर में काम कर रही 14 टीम

इस सर्वे के तहत शहर में इन दिनों 14 टीम जुटी हुई है। एक टीम में दो सदस्य है। करीब एक सप्ताह से यह टीम सर्वे कर रही है। इस सर्वे से पहले डिजिटल ऑनलाइन सैटलाइट से शहर का नक्शा बनाया गया है। जो सर्वे टीम है, वह उसी ऑनलाइन डाटा में धरातल पर जाकर सड़क की लंबाई चौड़ाई मापकर उस ऑनलाइन नक्शा में सर्वे आंकड़ों को फीड कर रही है।

क्या कहते हैं नप अधिकारी

नगर परिषद की एमई सोहनलाल ने बताया कि नगर परिषद म्हारी सड़क पोर्टल के तहत धरातल पर जाकर सर्वे कर रही है। शहर में ऐसी 14 टीम लगी हुई है। सैटलाइट से शहर के नक्शे से इस सर्वे के आंकड़ों को जोड़ा जा रहा है ताकि यह पता चल जाए कि शहर में कितनी सड़क है, उसकी स्थिति क्या है। सर्वे पूरा होने के बाद यह डाटा भी सामने आ जाएगा कि कहां सड़क निर्माण की जरूरत है। यह सर्वे के बाद काम में पूरी पारदर्शिता आ जाएगी।

गूगल प्ले स्टोर से कर सकेंगे डाउनलोड

हरपथ ऐप को गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड कर रजिस्ट्रेशन के बाद इस्तेमाल किया जा सकता है। सरकार का उद्देश्य इस नागरिक प्रतिक्रिया प्रणाली के माध्यम से सड़कों की गुणवत्ता सुधारना और जनता को बेहतर सुविधाएं प्रदान करना है। सरकार का दावा है कि इस पहल से सड़क रखरखाव में पारदर्शिता बढ़ेगी और नागरिकों को समस्याओं के समाधान की वास्तविक स्थिति जानने में आसानी होगी।

वार्ड नंबर 12 में नगर पालिका ने चलाया अतिक्रमण हटाओ अभियान

नई सड़क पर आवागमन में बांधा बना अतिक्रमण, जेसीबी से तोड़े चबूतरे

■ करीब 25 लाख रुपये की लागत से वार्ड 12 में बनाई जा रही हैं सड़क, लोगों को मिलेगा फायदा, तारकोल की होगी सड़क

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

शहर के वार्ड नंबर 12 के मौहल्ला वाल्मीकि में पूर्व पार्षद विजय महायच के घर से रामफल के घर तक नगर पालिका टीम द्वारा अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया गया। इस दौरान जेसीबी मशीन ने रोड पर बने चबूतरे व अन्य सामाग्री हटाई गई। लोगों की ओर से अभियान को लेकर कोई रोष नहीं जताया गया। टीम ने शांतिपूर्वक तरीके से धीरे धीरे करके लोगों द्वारा रोड पर बनाए चबूतरे को हटाया गया। नगर पालिका का यह अभियान सुबह करीब साढ़े दस बजे शुरू हुआ।

बता दें कि नगर पालिका शहर के वार्ड नंबर 12 में सड़क के निर्माण के लिए करीब 25 लाख रुपये खर्च कर नई सड़क का निर्माण किया जा रहा है। संबंधित ठेकेदार की ओर से सड़क निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है, लेकिन सड़क निर्माण को लेकर सड़क के बीच में बने चबूतरे बाधा बने हुए थे। नगर पालिका द्वारा पूर्व पार्षद विजय महायच के घर से रामफल के घर तक की सड़क को चौड़ा बनाने की योजना बनाई हुई है। शहर के मौहल्ला वाल्मीकि से लेकर रामफल के घर की सड़क करीब तीन साल से बदहाल अवस्था में पड़ी है। यह मार्ग स्टेट हाईवे को जोड़ने वाला मुख्य रास्ता है। इस मार्ग से हजारों की सख्या में वाहनों का आवागमन रहता है। आसपास के गांवों के ग्रामीण भी इसी रास्ते से आवगमन करते हैं। इसके अलावा स्टेट हाईवें से जोड़ने का यह मुख्य मार्ग है। रोड टूटे होने के कारण वाहन चालक भी परेशान थे। यह मार्ग करीब 2020 में बनाया गया था।

महेंद्रगढ़। कच्चे रास्ते को उखाड़ती जेसीबी मशीन। फोटो : हरिभूमि

अतिक्रमण हटाया गया

सड़क को चौड़ा करने को लेकर नगर पालिका की ओर से अतिक्रमण हटा दिया गया। यह सड़क काफी समय से जर्जर अवस्था में थी। निर्माण कार्य को लेकर गुणवत्ता पर विशेष फोकस रखा जाएगा, ताकि सड़क अच्छी बन सके। महेंद्रगढ़ शहर तेजी से विकसित होगा। शहर में सड़क, साफ-सफाई, पार्क, जल निकासी इन सब पर योजनाबद्ध तरीके से काम किया जा रहा है, ताकि लोगों को किसी प्रकार की परेशानियों का सामना न करना पड़े।
-रमेश सैनी, प्रधान नगर पालिका, महेंद्रगढ़।

मार्ग पर है कई दुकानें

इस मार्ग पर एक मंदिर, एक अस्पताल, स्कूल, पटवार घर सहित हजारों की संख्या में लोग रहते हैं। लोग लघु सचिवालय जाने के लिए इसी मार्ग का इस्तेमाल करते हैं। इसके अलावा लोग सब्जी मंडी व शहर का प्रमुख 11 हट्टा बाजार जाने के लिए इसी रोड से होकर गुजरते हैं। स्कूली विद्यार्थी व कॉलेज की छात्राएं महाविद्यालय में इसी रास्ते से जाते हैं। यह छोटा व आसान रास्ता भी है। आसपास के ग्रामीण पटवारी के पास भी इसी रास्ते से आते है। लोग प्रशासन से इस रोड का जल्द निर्माण करने की मांग उठा रहें थे।

खबर संक्षेप

258 विद्यार्थी ओलंपियाड परीक्षा में शामिल

नांगल चौधरी। सरस्वती पब्लिक स्कूल भोजावास में स्कूल स्तरीय ओलंपियाड परीक्षा का आयोजन प्राचार्य राजेश कुमार की देखरेख में संपन्न हुआ। जिसमें अव्वल रहे विद्यार्थियों को ब्लॉक स्तरीय परीक्षा में शामिल किया जाएगा। परीक्षा की पारदर्शिता व पवित्रता बनाए रखने के लिए शिक्षकों की ड्यूटियां लगाई गई। उन्होंने बताया कि विद्यार्थियों में मैथ, सामान्य ज्ञान व तार्किक क्षमता विकसित करने के लिए विभाग ने स्कूल, ब्लॉक, जिला तथा स्टेट स्तरीय ओलंपियाड परिक्षाएं निर्धारित की हैं। सरस्वती पब्लिक स्कूल के 258 विद्यार्थियों ने परीक्षा के लिए पंजीकरण कराया। जिनमें प्राइमरी विंग के 83ए मिडिल विंग के 117 तथा सीनियर विंग के 58 विद्यार्थी शामिल हैं। 100 अंकों की परीक्षा में मैथ, साइंस, सामान्य ज्ञान तथा रीजनिंग संबंधी सवाल पूछे गए। उन्होंने बताया कि सभी स्कूलों की परीक्षाएं संपन्न होने के बाद मेरिट सूची तैयार की जाएगी और सूची में शामिल विद्यार्थियों को ब्लॉक परीक्षा में शामिल करने का प्रावधान है। परीक्षा के सफलता पूर्वक आयोजन में संयोजक कुलदीप, अमर सिंह, ममता, बिक्रम सिंह, ज्योति, अमित कुमार का सक्रिय सहयोग रहा।

गीता महोत्सव में बीआर ज्ञानदीप विद्यालय के छात्रों का चयन

महेंद्रगढ़। अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता में बीआर ज्ञानदीप विद्यालय के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय तथा क्षेत्र का नाम रोशन किया है। प्रतियोगिता कक्षा अनुसार विभिन्न स्तर पर आयोजित की गईं, जिनमें विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा और ज्ञान का प्रभावशाली प्रदर्शन किया। निबंध लेखन प्रतियोगिता में कक्षा नौवीं से 12वीं के स्तर पर आरती पुत्री सुधीर ने मैंने गीता से क्या सीखा विषय पर लिखे गए निबंध के आधार पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। उनकी लेखनी में गीता के ज्ञान, कर्मयोग और जीवन प्रबंधन के सिद्धांतों का अद्भुत संतुलन देखने को मिला। वहीं, भाषण प्रतियोगिता में कक्षा छठी से आठवीं स्तर पर काव्या पुत्री विक्रम सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। उनके भाव, स्वर और आत्मविश्वास ने निर्णायकों के साथ-साथ दर्शकों को भी प्रभावित किया। इसके अतिरिक्त विद्यालय की क्विज टीम हर्ष, परम और हिमांशु ने गीता ज्ञान एवं भारतीय दर्शन पर आधारित प्रश्नोत्तरी में शानदार प्रदर्शन कर चौथा स्थान प्राप्त किया।

श्रीकृष्णा स्कूल में वार्षिक खेल उत्सव

■ खेलों में हार जीत कोई मायने नहीं रखती: डॉ. बीरसिंह यादव

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

श्रीकृष्णा स्कूल में वार्षिक खेल उत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि चेयरमैन डॉ. बीरसिंह यादव, विशिष्ठ अतिथि सीईओ कर्मवीर राव व चेयरपर्सन डॉ. कविता राव मुख्य रूप से उपस्थित रहे, जबकि अध्यक्षता प्राचार्य रवि प्रकाश द्वारा की गई। हेड संतोष यादव ने बताया कि वार्षिक खेल उत्सव में कक्षा नर्सरी से प्रथम कक्षा तक के बच्चों ने लिया। वार्षिक खेल उत्सव का मुख्यातिथि डॉ. बीरसिंह यादव द्वारा रिबन काटकर व मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर विधिवत शुभारंभ किया। सीईओ कर्मवीर राव, चेयरपर्सन डॉ. कविता राव ने सभी बच्चों का उत्साहवर्धन किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। बाधा दौड़ में कक्ष प्रथम से मिस्टी प्रथम, धुर्वी ने दूसरा व मेहूल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। साधारण दौड़ में अवनीत कक्षा नर्सरी, दिव्यांशी, कक्षा एलकेजी से प्रियांक ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। संतुलन दौड़ में अभिनव प्रथम, नक्ष ने दूसरा, नरेन ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। वहीं रिंग रेस में तेजस्वी प्रथम, भाविका ने दूसरा व आरोही ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं मानवी, निशू व जिव्यांशी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। चेयरमैन डॉ. बीरसिंह यादव ने कहा कि खेलों में हार जीत कोई मायने नहीं रखती बल्कि हारने वाले खिलाड़ी को आगे होने वाले मुकाबलों में कड़ी मेहनत के साथ मैदान में उतरना चाहिए। उन्होंने कहा कि खिलाड़ी समाज का निर्माता होता है तथा समाज को एक नई पहचान देता है। शिक्षा के साथ-साथ जीवन में खेलों का भी बहुत महत्त्व है। कार्यक्रम के अंत में चेयरमैन डा. बीरसिंह यादव, डा. कविता राव व प्राचार्य द्वारा सभी प्रतिभाशाली विजेताओं को मेडल पहनाकर सम्मानित किया गया।

महेंद्रगढ़। विजेताओं को मेडल पहनाकर सम्मानित करते हुए। फोटो: हरिभूमि

पढ़ाई के साथ खेलकूद भी जरूरी

शिक्षा का एक आवश्यक अंग खेलकूद भी है तथा खेलकूद शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहने का एक जरूरी हिस्सा है। सीईओ कर्मवीर राव ने कहा कि श्रीकृष्णा ग्रुप द्वारा विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के ऊपर बल दिया जाता है। विद्यार्थियों के लिए पढाई के साथ खेलकूद भी जरूरी है। चेयरपर्सन डॉ. कविता राव ने कहा कि विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ अधिक से अधिक खेलों में हिस्सा लेना चाहिए, क्योंकि खेल जहां उन्हें सेहत प्रदान करते है, वहीं उनके शरीरिक व मानसिक विकास में भी अहम योगदान देते हैं।

भारत को जनो स्पर्धा में सीएल स्कूल के विद्यार्थी द्वितीय

नारनौल। भारत विकास परिषद की ओर से आयोजित भारत को जानो प्रतियोगिता में शहर के हुडा सेक्टर स्थित सीएल पब्लिक स्कूल के छात्र यश सैनी पुत्री राजेश कुमार व धर्मांशु पुत्र सुरेश ने वरिष्ठ वर्ग जिला स्तरीय प्रतियोगिता में सामूहिक टीम के रूप में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कनिष्ठ वर्ग में छात्र निशांत पुत्र अतर सिंह व ध्रुव सैनी पुत्र मनीष सैनी ने जिला स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त कर विद्यालय, क्षेत्र व परिवार को गौरवान्वित किया। इससे पूर्व आयोजित हुई विद्यालय स्तर प्रतियोगिता में वरिष्ठ वर्ग में यश सैनी, धर्मांशु व यश सैन क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय रहे। कनिष्ठ वर्ग में निशांत, ध्रुव सैनी व धीरज क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय रहे। जिसमें प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त छात्रों को सामूहिक टीम के रूप में जिला स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयनित किया गया।

हरिभूमि बम्पर इनामी योजना-2025 के विजेताओं के नाम

तेरहवां पुरस्कार (सांत्वना पुरस्कार) (151 से 200)

❖ शंकर लाल पुत्र श्री राम अवतार निवासी गांव हनुमान ढाणी, जिला भिवानी ❖ कार्तिक पुत्र श्री श्याम सुन्दर निवासी वार्ड नं. 6, गांव चांग, भिवानी ❖ बिशम्बर पुत्र श्री हरीश चन्द्र निवासी गांव लहलाना जिला भिवानी ❖ भूप सिंह वशिष्ठ पुत्र श्री रामगोपाल निवासी मकान नं. 41, चौखमइश, भिवानी ❖ श्रेयांश पुत्र श्री संजीव कुमार निवासी अलबेला गली, जैन चौक, भिवानी ❖ प्रिया पुत्री श्री संदीप कुमार निवासी सीसीएसएचएयू, गेट नं.2, हिसार ❖ पूजा पत्नी श्री बिजेन्द्र निवासी गांव नर्कापुर जिला भिवानी ❖ रविन्द्र पुत्र श्री राजपाल निवासी गांव प्रेम नगर, जिला भिवानी ❖ निखिल कुमार पुत्र श्री सोमबीर निवासी गांव तिगराना जिला भिवानी ❖ रोबिन पुत्र श्री कुलबीर निवासी गांव प्रेम नगर, जिला भिवानी ❖ कुलदीप पुत्र श्री करतार सिंह निवासी गांव प्रेम नगर, जिला भिवानी ❖ संदीप पुत्र श्री सुरत सिंह निवासी गांव प्रेम नगर, जिला भिवानी ❖ प्रदीप पुत्र श्री हरिचन्द निवासी गांव प्रेम नगर, जिला भिवानी ❖ आकार दहिया पुत्र श्री कर्मवीर दहिया निवासी वार्ड नं. 3, गांव तिगराना, जिला भिवानी ❖ नेहा पत्नी आकाश दहिया निवासी वार्ड नं. 3, गांव तिगराना, जिला भिवानी ❖ आकाश पुत्र श्री संजय निवासी ओल्ड बस स्टैंड, गुजरों की ढाणी, भिवानी ❖ जीवंश पुत्र श्री विकास निवासी ओल्ड बस स्टैंड, भिवानी ❖ अमित पुत्र श्री वेद प्रकाश निवासी ओल्ड बस स्टैंड, गुजरों की ढाणी, भिवानी ❖ नवीन पुत्र श्री प्रदीप अरोड़ा निवासी मकान नं. 219, चिरंजीव कालोनी, भिवानी ❖ रोहित पुत्र श्री ओम प्रकाश निवासी ओल्ड बस स्टैंड, गुजरों की ढाणी, भिवानी ❖ कांता पत्नी बलबीर शर्मा निवासी इंद्राज गार्डन के पीछे, बैंक कालोनी, भिवानी ❖ संदीप पुत्र श्री सुभाष निवासी नजदीक ओल्ड बस स्टैंड, भिवानी ❖ नीलम देवी पत्नी श्री मनोज कुमार निवासी गांव व डाकखाना तिगड़ाना, जिला भिवानी ❖ सोमबीर सिंह पुत्र श्री प्रभाती राम निवासी गांव तिगड़ाना, वार्ड नं. 3, जिला भिवानी ❖ प्राची पुत्री श्री विरेन्द्र निवासी ओल्ड बस स्टैंड, भिवानी ❖ मदन लाल पुत्र श्री रामधारी निवासी मकान नं. 582, सेक्टर 13, हुडा, भिवानी ❖ महाबीर सिंह पुत्र श्री चन्दगी राम निवासी गांव व डाकखाना दिनोद, वार्ड नं. 5, भिवानी ❖ धर्मवीर सिंह पुत्र श्री प्रभाती राम निवासी गांव तिगड़ाना वार्ड नं.3, जिला भिवानी ❖ मनोज कुमार पुत्र श्री प्रभाती राम निवासी गांव तिगड़ाना, जिला भिवानी ❖ सचिन पुत्र श्री कर्मबीर निवासी गांव तिगड़ाना जिला भिवानी ❖ सुमन देवी पत्नी श्री सोमबीर निवासी वार्ड नं.3, गांव तिगड़ाना ज्ला भिवानी ❖ रवि कुमार पुत्र श्री सोमवीर निवासी गांव तिगड़ाना जिला भिवानी ❖ सन्तोष देवी धर्मपत्नी करनबीर सिंह, दाड़ौली, चरखी दादरी ❖ पूर्वाशी सुपुत्री सोमबीर, दगड़ौली, चरखी दादरी ❖ भूपेश सुपुत्र श्री सोमबीर, दगड़ौली, बाढड़ा, चरखी दादरी ❖ श्री आनन्द सुपुत्र प्रभु सिंह, एमसी कॉलोनी, चरखी दादरी, तह. जिला चरखी दादरी ❖ श्री पवन कुमार हेयर ड्रेसर, सुपुत्र श्री सुभाष चंद्र, हीरा चौक, बधवाना गेट, तह. व जिला चरखी दादरी ❖ श्री दलबीर सिंह सुपुत्र श्री शीशराम नंबरदार, बिरही कलां, तह. व जिला चरखी दादरी ❖ श्री जय भगवान सुपुत्र श्री नफे सिंह, 1344/1, लाल बहादुर शास्त्री नगर, रोहतक ❖ श्री रामकवार सुपुत्र श्री गुगुनराम (पानन्य), गांव व डा. करौंथा, शीतल नगर, रोहतक ❖ श्रीमति पूजा पत्नी श्री सुनील चावला, म.नं. 304, बड़ा पाना, कलानौर, रोहतक ❖ श्री धर्मवीर सुपुत्र मीर सिंह, गांव व डा. बलियाणा, तह. सांपला, रोहतक ❖ श्री यागेश सुपुत्र नरेंद्र, गांव व डा. अजायब, तह. महम, रोहतक ❖ श्री भास्कर राय सुपुत्र श्री रामचंद्र राय, 824/20, एकता कॉलोनी, रोहतक ❖ श्री संजय सुपुत्र श्री रामतीर्थ शर्मा, 1035/1, शास्त्री नगर, रोहतक ❖ श्री मनमोहन सुपुत्र श्री नरेंद्र जिंदल, गांव व डा. अजायब, तह. महम, रोहतक ❖ श्रीमति राजरानी पत्नी श्री नरेन्द्र कुमार, गांव व डा. अजायब, तह. महम, रोहतक ❖ श्री नरेन्द्र कुमार सुपुत्र श्री महावीर प्रसाद, गांव व डा. अजायब, तह. महम, रोहतक ❖ श्री अशोक सुपुत्र श्री ओमप्रकाश, अग्रसेन कॉलोनी, रोहतक ❖ श्री दीपक सुपुत्र श्री अशोक, अग्रसेन कॉलोनी, रोहतक

क्रमशः

शेष विजेताओं की सूची अगले अंक में देखें

आवश्यक सूचना :

1. सभी पुरस्कारों का वितरण 1 दिसम्बर 2025 से किया जाएगा।
2. पुरस्कार संख्या 1 से 3 तक के विजेताओं को हरिभूमि मुख्यालय, नजदीक इंडस पब्लिक स्कूल, रोहतक से पुरस्कार प्राप्त हो सकेंगे।
3. पुरस्कार संख्या 4 से 13 उपहार के विजेताओं को संबंधित हरिभूमि कार्यालय अभिकर्ता से पुरस्कार प्राप्त हो सकेंगे।
4. यदि किसी भी पुरस्कार पर सरकार के नियमानुसार टी.डी.एस. लागू होगा तो विजेता को लागू टी.डी.एस. की राशि हरिभूमि कार्यालय में एडवांस में जमा करनी होगी।
5. पुरस्कार प्राप्त करने के लिए आपको अपने साथ पुरस्कार विजेता की फोटो आईडी की फोटो प्रति जमा करनी होगी। मूल प्रति को मिलान हेतू साथ में लाना अनिवार्य है।
6. अधिक जानकारी के लिए आप निम्न नम्बरो पर हरिभूमि प्रसार विभाग में प्रात: 11.00 से सायं 4.00 बजे तक सम्पर्क कर सकते हैं :- फोन : 9253681019-20

- कार्यालय पता -

हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8814999151, 9253681005, 8295157800

कार्रवाई पुलिस ने 24 घंटे में ही दो आरोपितों को किया गिरफ्तार

पिस्तौल तानकर रूट बंद करने का दिया अल्टीमेटम, बच्चें व अभिभावक सहमें

■ शिकायत मिलने पर पुलिस प्रशासन में मचा हड़कंप

■ बोलेरो गाड़ी और खिलौनानुमा पिस्तौल जब्त

हरिभूमि न्यूज ⏭ नांगल चौधरी

निजी स्कूल बस चालक पर बोलेरो सवार बदमासों ने पिस्तौल तानकर सिरोही बहाली, मोहनपुर रूट बंद करने का अल्टीमेटम दिया। स्कूल प्राचार्य की शिकायत मिलने पर पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ ने थाना प्रभारी को त्वरित कार्रवाई के निर्देश देते हुए आरोपितों को गिरफ्तार करने के आदेश दिए। रात भर छापेमारी कार्रवाई करने के बाद पुलिस को दो आरोपितों को गिरफ्तार करने में मदद मिली है। जिनसे बोलेरो गाड़ी व खिलौनानुमा पिस्तौल जब्त करके पुलिस ने आगामी कार्रवाई आरंभ कर दी है।

नारनौल। दोनों आरोपित।

पुलिस को दी शिकायत में प्राचार्य ने बताया कि कुलताजपुर रोड़ पर स्थित एमएलएस डीएवी स्कूल ने ग्रामीण रूटों पर बसों का प्रबंध कर रखा है। जिससे बच्चों को समय पर पहुंचना संभव हो पाता है। शिकायतकर्ता ने बताया कि 20 नवंबर की शाम स्कूल बस सिरोही बहाली, मोहनपुर, ढाणी बंधावाली, नांगल कालिया, कालबा गांव के बच्चों को लेकर रवाना हुई थी। इसी दौरान सिरोही बहाली के पास एक सफेद रंग की बोलेरो गाड़ी ने बस का मार्ग रोक लिया तथा तीन से चार नकाबपोश युवक ने चालक पर पिस्तौल तान दी। परिचालक को भी चुप रहने का अल्टीमेटम दिया। आरोपितों ने चालक को कहा कि इस रूट पर बस चलाना बंद कर दे, अन्यथा जानलेवा जोखिम पैदा कर देंगे। अल्टीमेटम देने के बाद सभी आरोपित बिना नंबर प्लेट वाली बोलेरो गाड़ी में बैठकर भाग गए। चालक व परिचालक से वारदात की सूचना मिलने पर प्राचार्य ने पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ट को शिकायत देकर आरोपितों को तत्परता पूर्वक गिरफ्तार करने के निर्देश दिए। सीआईए नारनौल के साथ संयुक्त छापेमार टीम ने रात भर एक दर्जन से अधिक संदिग्ध ठिकानों पर दाबिश दी। इसके बाद देर रात दो आरोपितों को पकड़ने में सफलता मिली है। घटना के बाद स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे तथा अभिभावकों में भय का माहौल बना हुआ है। जिस कारण शनिवार को इस रूट से अधिकांश बच्चों ने स्कूल जाना उचित नहीं समझा।

खिलौनानुमा पिस्तौल व बोलेरो जब्त

थाना इंचार्ज भगत सिंह ने बताया कि बस का रास्ता रोककर चालक पर पिस्तौल तानकर अल्टीमेटम देने वाले नामजद दोनों आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपितों से वारदात में इस्तेमाल की गई बोलेरो गाड़ी व खिलौनानुमा पिस्तौल जब्त की गई है। स्कूल प्राचार्य की शिकायत पर केस दर्ज करके पुलिस मामले की छानबीन में जुटी हुई है। उन्होंने बताया कि अपराधिक तत्वों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

खबर संक्षेप

नन्हे-मुन्हों ने वन्य जीव संरक्षण के दिए संदेश

भिवानी। लिटल हार्टस कान्वेन्ट स्कूल में यूकेजी कक्षा के बच्चों की ऐनिमल किंगडम प्रतियोगिता का आयोजन किया। विद्यालय के महासचिव संजय गोयल, एमडी पवन गोयल व भावना गोयल ने बताया कि नन्हे-मुन्हे बच्चों ने अपने उत्साह व आत्मविश्वास का परिचय देते हुए एक से बढ़कर एक अपनी अदभुत प्रतिभा का प्रदर्शन किया व बच्चों ने वन्य जीवों शेर, चीता, भालू, हिरण, जिराफ, जेबरा, बन्दर, पांडा, पोकेपाईन, हाथी, भेड़ व ऊंट आदि की वेशभूषा में आकर्षक किरदार निभाते हुए वन्य जीव संरक्षण संबंधी अनेक महत्वपूर्ण संदेश दिए। यूकेजी कक्षा की मुस्कान, गिरिशा, ज्योत्सना, रूद्र, दिव्यांश सोनी, पारूषी, अर्नव, वृन्दा, अनन्या, भाविक, केशवी, हृदया, नवनीत, वाशी व समीक्षा ने अपनी अदभुत प्रतिभा का प्रदर्शन किए।

जूनियर जूडो चैंपियनशिप में जीता रजत पदक

भिवानी। पंडित सीताराम शास्त्री कन्या स्कूल की 8वीं कक्षा की भूमिका ने 19 और 20 नवंबर को हैदराबाद में हुई सब जूनियर राष्ट्रीय जूडो चैंपियनशिप में रजत पदक जीतकर अपने स्कूल और जिले का नाम रोशन किया है। प्रतियोगिता का आयोजन जूडो फेडरेशन ऑफ इंडिया ने करवाया, जिसकी मेजबानी तेलंगाना जूडो एसोसिएशन ने की थी। पदक विजेता भूमिका तंवर को पदक के साथ 70 हजार रुपये का नकद पुरस्कार भी प्राप्त किया। पदक विजेता भूमिका तंवर का विद्यालय पहुंचने पर शनिवार को भव्य स्वागत हुआ। प्राचार्या सोनिया कौशिक के नेतृत्व में समस्त स्टाफ सदस्यों और छात्राओं ने भूमिका का जोरदार अभिनंदन किया।

कैडेट्स ने गांवों में लोगों को किया जागरूक

चरखी दादरी । गांव डोहका हरिया स्थित एआरईडी सीनियर सेकेंडरी स्कूल परिसर में एनसीसी सप्ताह के अंतर्गत अनेक गतिविधियों का आयोजन किया। विद्यालय प्रबंधक राजकुमार सांगवान के निर्देशन में कार्यक्रम में एनसीसी यूनिट के तत्वावधान में संपन्न हुआ। 11 हरियाणा बटालियन एनसीसी के आदेशानुसार कार्यक्रम आयोजित किए। कैडेट्स ने डोहका हरिया सहित आसपास के गांवों में पहुंचकर विभिन्न सामाजिक विषयों में लोगों को जागरूक किया।

स्कूल में मोबाइल प्रतिबंध का संघ ने किया स्वागत

भिवानी। हरियाणा विद्यालय अध्यापक संघ ने विद्यालय परिसर में छात्रों के साथ-साथ शिक्षकों द्वारा मोबाइल के उपयोग पर लगाए प्रतिबंध का खुले दिल से स्वागत किया है। संघ ने ये कदम शिक्षा के वातावरण को गंभीर, स्वच्छ और विद्यार्थी केंद्रित बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल बताया है। संघ ने सरकार की विरोधाभासपूर्ण नीति पर भी तीखा हमला बोला है और शिक्षकों को गैर-शैक्षणिक कार्यों के बोझ से मुक्त करने की भी मांग की। अध्यापक संघ हिसार एवं नूंह के जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा जारी आदेशों का स्वागत करता है, जो डायरेक्टर सेकेंडरी के 2017 और 2018 के पुराने निर्देशों का पुनः अनुस्मरण करवाते हैं।

नई श्रम संहिता का किया विराध

भिवानी। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी की भिवानी जिला कमेटी ने

केंद्र सरकार द्वारा 40 करोड़ श्रमिकों पर सुरक्षा संबंधी लागू वर्तमान 27 कानूनों को एक तरफा तौर पर संसद में बहुमत का फायदा उठाकर समाप्त कर दिया और चार नई श्रम सहिता थौंपकर उनकी पीठ में छुरा घोंपने का काम किया है तथा अपने चहेते कारपोरेट को और ज्यादा मालोमाल करने का रास्ता साफ कर दिया है। माकपा जिला सचिव कामरेड ओमप्रकाश ने जारी प्रेस ब्यान में केंद्र की राजग व भाजपा सरकार पर आरोप लगाया कि वह पिछले पांच वर्षों से इस अवसर की तलाश में थी कि संसद में पास होने के बाद मजदूरों के विरोध के बावजूद इनको थौंपने में कैसे कामयाब हो।

भारतीय कबड्डी और वायुसेना के गौरव की दोहरी उड़ान

बागडोगरा इंडोर स्टेडियम अर्जुन अवार्डी राममेहर सिंह के नाम किया समर्पित

- स्टेडियम का उद्घाटन एयर ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ ईस्टर्न एयर कमांड ने किया

हरिभूमि न्यूज : भिवानी

बागडोगरा । इंडोर स्टेडियम का नामकरण अर्जुन अवार्डी राममेहर सिंह के नाम करते ईस्टर्न एयर कमांड के एयर ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ।

भारतीय कबड्डी के इतिहास में अभूतपूर्व और गर्व का क्षण दर्ज किया गया, क्योंकि एयर फोर्स स्टेशन बागडोगरा के अत्याधुनिक इंडोर स्टेडियम का नाम अर्जुन अवार्डी एमडब्ल्यूओ (सेवानिवृत्त) राममेहर सिंह के नाम पर समर्पित किया। स्टेडियम का उद्घाटन एयर ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ, ईस्टर्न एयर कमांड ने किया। यह समर्पण भारतीय वायुसेना में उनके असाधारण करियर व भारतीय कबड्डी को खिलाड़ी और अत्यंत सफल कोच के रूप में दिए उनके अद्वितीय योगदान के सम्मान में किया है। बता दें कि राममेहर सिंह पहले ऐसे कबड्डी आइकन बन गए, जिनके नाम पर भारतीय इतिहास में दो प्रमुख स्टेडियम समर्पित किए गए हैं। पहले एयर फोर्स स्टेशन जालहल्ली (बेंगलुरु) का इंडोर स्टेडियम भी उनकी खेल एवं सेवा विरासत को सलाम करते हुए उनके नाम किया जा चुका है। यह दोहरी मान्यता उनकी असाधारण उपलब्धियों, भारतीय खेल परिदृश्य पर उनके गहन प्रभाव और भारतीय वायुसेना में उनकी अनुकरणीय सेवा का शक्तिशाली प्रमाण है। एमडब्ल्यूओ (सेवानिवृत्त) राममेहर सिंह ने न केवल भारतीय वायुसेना में देशसेवा की, बल्कि कबड्डी के खेल को भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। उन्होंने भारतीय टीम के लिए कई महत्वपूर्ण सफलताएं अर्जित की, उनकी कोचिंग में टीमों ने अभूतपूर्व प्रदर्शन किया है, जिसमें एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक व प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) में पटना पाइरेट्स के साथ लगातार तीन चैंपियनशिप जीतना शामिल है। उन्हें खेल कौशल व कोचिंग उत्कृष्टता के लिए अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया, जो भारतीय खेल जगत में सर्वोच्च सम्मानों में से एक है। एयर फोर्स स्टेशन बागडोगरा में इंडोर स्टेडियम का समर्पण भारतीय वायुसेना की खेल संस्कृति के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है, ये नया स्टेडियम स्टेशन के कर्मियों और उनके परिवारों को उत्कृष्ट खेल सुविधाएं प्रदान करेगा, जिससे शारीरिक फिटनेस और खेल उत्कृष्टता को बढ़ावा मिलेगा। राममेहर सिंह का नाम इस सुविधा से जुड़ना, भावी पीढ़ियों के खिलाड़ियों और वायु योद्धाओं के लिए प्रेरणा का शाश्वत स्रोत बनेगा।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर युवा कल्याण संगठन के संरक्षक कमल प्रधान, पूर्व प्रधान बलवान सिंह, देशमुख दद्दरवाल, मुकेश शर्मा ढाणीमाहु, अनिल शेषमा, सुरेश प्रजापत, बालकिशन गोयल, सुरेश कुमार, अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी नरेश कुमार, रमेश कुमार, मनीष कुमार, समर सिंह, अजमेर सिंह, कृष्ण कुमार, हरिस्वरूप, विश्वजीत सिंह, सुरेंद्र सिंह आदि खेलप्रेमियों ने खुशी जताई।

एचडी स्कूल में मनाई चंद्रशेखर वैंकट रमन की पुण्यतिथि

चरखी दादरी। एचडी स्कूल बिरोहड़ के प्रांगण में भारत के महान वैज्ञानिक, नोबेल पुरस्कार विजेता और 'रमन इफेक्ट' के खोजकर्ता सर चंद्रशेखर वैंकट रमन की पुण्यतिथि बड़े ही श्रद्धा, सम्मान और गरिमा के साथ मनाई। विद्यालय में आयोजित इस विशेष कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को महान वैज्ञानिकों के योगदान से अवगत करवाना और विज्ञान के प्रति उनकी जिज्ञासा को प्रोत्साहित करना था। विद्यालय के निदेशक बलराज फौगाट ने कहा कि रमन के जीवन, उनकी वैज्ञानिक सोच, शोध एवं रमन इफेक्ट की खोज पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सर सीवी रमन न केवल एक महान वैज्ञानिक थे, बल्कि वे भारत के गौरव, प्रेरणा और विज्ञान जगत की दूरदर्शी धरोहर हैं।

237 करोड़ से सुधारी जाएगी शहर की पेयजल व्यवस्था

शहर में 127 किलोमीटर नई डीआई पाइपलाइन का बिछेगा नेटवर्क

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

भिवानी। शहर स्थित जर्जर बुस्टर का दृश्य।

सरकार ने हर घर तक पूरा व स्वच्छ पानी की सप्लाई पहुंचाने के लिए कमर कस ली है। वैध व अवैध कॉलोनियों में करीब 127 किलोमीटर की नई पाइप लाइन का नेटवर्क बिछाने की योजना है। उक्त पाइप लाइन डीआई होंगे, जो कि जंग व अन्य किसी तरह का दबाव भी सह पाएंगे। इन पाइपों के बिछाने के बाद पानी की लिकेज, जंग आदि की समस्या खतम हो जाएगी। उसके बाद शहर के किसी भी कोने में पीने के पानी की कोई समस्या नहीं रहेगी।

शहर की पेयजल सप्लाई व सीवरेज के सुधारीकरण के लिए करीब 237 करोड़ रुपये का बजट मंजूर किया है। मंजूर राशि से होने वाले सभी सार्वजनिक कार्यों का ब्यौरा भी भेजा गया है। साथ ही पुराने जलघर के निर्माण व अन्य जलघरों की पानी स्टोरेज की क्षमता को बढाया जाएगा। साथ ही जिन इलाकों में पीने के पानी की कमी है या कम पहुंचने की समस्या है। उन इलाकों में पाइप लाइन बिछाई जाएगी। जिनमें उक्त राशि के कार्यो पर जल्द ही टेंडर लगाए जाने की प्रक्रिया शुरू होने जा रही है। विगत में उक्त सभी योजनाओं का खाका विधायक घनश्याम सर्राफ ने पब्लिक हेल्थ विभाग के अधिकारियों को साथ लेकर तथा शहर की जनता की मांग के अनुरूप तैयार करवाया था। अब विधायक घनश्याम सर्राफ ने ही उक्त योजनाओं को सीएम नायब सैनी से मिलकर बजट जारी करवाया है। इन कार्यो के पूरा होने के बाद शहर के हर घर तक पर्याप्त व स्वच्छ पानी पहुंच सकेगा। बूढ़ी मशीनरी की पानी सप्लाई की क्षमता घटी इस प्रस्ताव का मकसद और पाट्र्स बनाकर, रॉ वाटर स्टोरेज कैपेसिटी बढ़ाकर, नए टैंक बनाकर, वाटर वर्क्स और बूस्टिंग स्टेशनों पर मौजूदा स्ट्रक्चर को बेहतर बनाकर/रिनोवेट करके, और टाउन में बाकी डिस्ट्रीब्यूशन पाइपलाइन बिछाकर पूरे वाटर सप्लाई इंफ्रास्ट्रक्चर को बेहतर बनाना है। चूंकि अभी तक जलघरों तक कच्चे पानी का कम पहुंचना, पुराने जलघर में 75 साल पहले टैंक बनाए गए थे, वे अब खराब हो गए है,पुरानी मशीन होने की वजह से क्षमता बेहद कम हो गई है। इनके अलावा मुख्य इलाकों में एसी पाइप लाइन पुरानी हो चुकी है,जिस वजह से दूषित पानी की समस्या बनी है।

क्या कहते है विधायक

विधायक घनश्याम सर्राफ ने बताया कि विगत में शहर के लोगों तथा पब्लिक हेल्थ विभाग के अधिकारियों के साथ कई बार मीटिंग करके पेयजल को लेकर अनेक सार्वजनिक कार्यों को सूचीबद्ध किया गया था। बाद में पब्लिक हेल्थ विभाग के अधिकारियों के साथ मिलकर उक्त कार्यों का प्रस्ताव तैयार करवाकर सरकार के पास भेजा गया। अब शहर की पेयजल व्यवस्था को सुधारने के लिए करीब 235 करोड़ रुपये की राशि का बजट जारी हुआ है। इन कार्यों के टेंडर लगने व कार्य पूरा होने के बाद शहर के किसी भी कोने में पीने के पानी की कोई समस्या नहीं रहेगी।

अनेक जगहों पर पीने के पानी की समस्या और कमी को लेकर लोग परेशान

आए दिन अनेक जगहों पर पीने के पानी की समस्या व कमी को लेकर लोग परेशान रहते है। खासकर बाहरी कॉलोनियों के लोगों के समक्ष यह समस्या सबसे बड़ी बनी है। इस समस्या से निपटने के लिए शहर की अप्रूवड व अन अप्रूवड कॉलोनियों में एक पाइप लाइन बिछवाई जाएगी। ताकि हर घर तक साफ व सुथरा पानी पहुंच सके। जिसकी पब्लिक हेल्थ ने पूरी तैयारी कर ली है। दूसरी तरफ पब्लिक हेल्थ विभाग ने शहर में करीब 18 हजार नए कैनेक्शनों को वैध किया जाएगा। जिसका खाका तैयार किया जा रहा है।

23 बूस्टिंग स्टेशनों में डाली जाएगी नई जान

शहर के करीब 23 बूस्टिंग स्टेशनों के लिए नई राइजिंग मेन्स और सिविल स्ट्रक्चर की मरम्मत करवाई जाएगी। चूंकि अधिकांश बुस्टिंग स्टेशन जर्जर हो चुके है। जिनकी पानी की क्षमता भी बेहद कम हो चली है। ऐसे में उनकी मरम्मत करवाया जाना निहायत जरूरी है। जिनमें बंसी लाल पार्क, गवर्नमेंट कॉलेज, लोहार बाजार, आदि शामिल है।

भिवानी। शिक्षकों के साथ विजेता टीम। फोटो : हरिभूमि

राज्य स्तरीय विज्ञान प्रश्नोत्तरी में राजकीय कॉलेज प्रथम

- एमएनएस राजकीय महाविद्यालय में विस्तार व्याख्यान विज्ञान प्रोत्साहन गतिविधियों का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

महाराजा नीमपाल सिंह राजकीय महाविद्यालय में विज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए करवाई जा रही विभिन्न गतिविधियों की श्रृंखला के तहत विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया। हरियाणा स्टेट काउंसिल फॉर साइंस, इनोवेशन एंड टेक्नोलोजी द्वारा प्रायोजित विस्तार व्याख्यान में टीआईटी की सहायक प्रोफेसर संचिता ने मुख्य वक्ता की भूमिका का बखूबी निर्वहन करते हुए अभियांत्रिकी में रसायन शास्त्र विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

विद्यार्थियों का रसायन शास्त्र विषय से संबंधित विभिन्न आयामों पर ज्ञानवर्धन किया। डॉ. सतीश कुमार ने मुख्य वक्ता का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि ऐसे व्याख्यानों से विद्यार्थियों की विषय के प्रति अभिरुचि उत्पन्न होती है। महाविद्यालय में 15 दिन से चल रही विज्ञान प्रोत्साहन गतिविधियों का समापन हुआ और विभिन्न गतिविधियों के विजेताओं को सम्मानित किया। कार्यक्रम में मुख्यतिथि के रूप में प्राचार्य डॉ. जगबीर सिंह ने शिरकत की और प्रतिभागियों को सम्मानित कर उनका उत्साहवर्धन किया। हरियाणा स्टेट काउंसिल फॉर साइंस इन्नोवेशन एंड टेक्नोलॉजी हर वर्ष हरियाणा के महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए विभिन्न स्तरों पर विज्ञान प्रश्नोत्तरी का आयोजन करती है। राज्य स्तर पर प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाली टीमों को जो इनामी राशि मिलती है उसके 50 प्रतिशत हिस्से से संबंधित महाविद्यालय में विद्यार्थियों में विज्ञान क्षेत्र में रुचि पैदा करने के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करवाया जाता है। इसी वर्ष मार्च में आयोजित राज्य स्तरीय विज्ञान प्रश्नोत्तरी में राजकीय महाविद्यालय भिवानी के छात्रों ने प्रथम स्थान प्राप्त कर एक लाख रुपये की इनामी राशि जीती थी।

भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं की कथा सुनाई

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

भिवानी। श्रीकृष्ण कथामृत का श्रवण करते श्रद्धालु। फोटो : हरिभूमि

दिनोद गेट स्थित खाकी बाबा मंदिर में जारी पांच दिवसीय श्रीकृष्ण कथामृत के चौथे दिन वातावरण भक्ति और आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत रहा। इस दौरान आशुतोष महाराज की शिष्या साध्वी जयंती भारती ने अपनी मधुर वाणी से श्रद्धालुओं को भगवान श्रीकृष्ण की विभिन्न लीलाओं के प्रसंगों का श्रवण करवाया। इस दौरान साध्वी बहनों ने सुमधुर भजनों का गायन किया। इस मौके पर मुख्य यजमान के तौर पर अनाज मंडी जनसेवा संस्थान के प्रधान नरेश गर्ग व रमेश कुमार ग्रोवर का परिवार पहुंचा।

साध्वी जयंती ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व इतना विराट है कि उसे किसी एक परिभाषा मं परिभाषित नहीं किया जा सकता। कहीं तो वे वृंदावन की निकुंज गलियों में गौ चराते गोपालक है, कही बांसुरी की सुर लहरियों से सबको मोहित करने वाले बंसी बजैया, कहीं ग्वाल सवाओं के साथ गोपियों के घ्रा से माखन चुराने वाले माखन चुरैया, कभी अपनी कनिष्ठिका पर गोवर्धन को धारण करने वाले गोवर्धनधारी, कभी अधर्मी कंस, शिशुपाल इत्यादि के प्राण हरने वाले यदुवीर है तो कुरूक्षेत्र की युद्ध भूमि में अर्जुन को गीता उपदेश देने वाले योगेश्वर परम योगी। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण की कथा श्रवण करने से अपने जीवन के वास्तविक लक्ष्य का बोध होता है कि केवल प्रभु प्राप्ति ही जीवन का परम लक्ष्य है। साध्वी जयंती भारती ने कहा कि प्रत्येक मानव स्वयं को दोराहे पर पाता है, जिसे शास्त्र व ग्रांथों में श्रेय मार्ग, सर्व कल्याणकारी मार्ग व प्रेय मार्ग अर्थात एंद्रिय सुखों से भरपूर स्वार्थ व विनाश से भरपूर मार्ग कहते है। उन्होंने कहा कि हम स्वयं को पहचाने, भीतर उठने वाली अंतरात्मा की चीत्कार सुने, उस पर अमल करें तो निश्चय ही समस्याओं का समाधान हो जाए। साध्वी ने कहा कि भाव व प्रेम के लिए मानव को प्रभु भक्ति से जुड़ना पड़ेगा। प्रभु भक्ति को पूर्ण सदगुरू ही हमारे भीतर प्रकट कर सकता है। कथा का समापन विधिवत प्रभु की आरती के साथ हुआ।

2 युवाओं ने रक्तदान कर मानवता की सेवा का संकल्प लिया

समाज सुधारक महात्मा ज्योतिबा फुले को किया नमन, दी श्रद्धांजलि

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

भिवानी । रक्तदाताओं को बैज लगाकर व प्रमाण पत्र भेंट करते सम्मानित करते अतिथि।

महान समाज सुधारक एवं शिक्षा के अग्रदूत महात्मा ज्योतिबा फुले की पुण्यतिथि पर शनिवार को चौधरी बंसीलाल नागरिक अस्पताल में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। शिविर श्रीकृष्ण कृपा जीयो गीता परिवार एवं नवदुर्गा सेवा सहयोग संस्था द्वारा संयुक्त रूप से लगाया, जिसमें 22 युवाओं ने उत्साहपूर्वक रक्तदान कर मानवता की सेवा का संकल्प लिया और महात्मा फुले को सच्ची श्रद्धांजलि दी। शिविर में पतंजलि के जिला प्रभारी एवं हरियाणा योग आयोग के सदस्य डॉ. मदन मानव ने बतौर मुख्यतिथि शिरकत की। इस मौके पर मुख्यतिथि डॉ. मानव, कैंप इंचार्ज डॉ. रोहित ने संयुक्त रूप से शिविर का विधिवत शुभारंभ किया। सभी रक्तदाताओं को अतिथियों ने बैज लगाकर सम्मानित किया।

डॉ. मदन मानव ने रक्तदान के महत्व को रेखांकित कर इसे महादान बताया। उन्होंने कहा कि रक्तदान जीवनदान है, इसकी तुलना किसी भौतिक दान से नहीं की जा सकती, क्योंकि हमारे द्वारा किया गया रक्तदान कई अनमोल जिंदगियों को बचाता है। स्वस्थ व्यक्ति को हर तीन महीने में रक्तदान अवश्य करना चाहिए, यह केवल जीवन बचाता नहीं, बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी है।

निपटारा आज सुनी जाएंगी बंसीलाल पार्क में तीन वार्डो के लोगों की समस्याएं:भवानी

खुले दरबार से नगर परिषद निपटाएगी लोगों की समस्याएं' नहीं होगी दिक्कत

शहर की स्वच्छता को पंख लगाने की कवायद तेज

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

भिवानी। आयोजित बैठक में पार्षदों के साथ बातचीत करते नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह।

शहर की स्वच्छता को पंख लगाने तथा नप से संबंधित लोगों की अनेक समस्याओं के निदान के लिए नप आपके द्वार के तहत हरके वार्ड में खुला दरबार लगाने जा रही है। इन खुले दरबारों में संबंधित वार्ड के पार्षद, चेयरपर्सन के अलावा नप के अनेक अधिकारी उपस्थित रहेंगे। खुले दरबार में नप से संबंधित सभी समस्याओं का मौके पर ही निदान करवाया जाएगा। खासकर खुले दरबार में शहर की स्वच्छता से संबंधित समस्याओं पर फोकस रहेगा। इसी क्रम में रविवार को शहर के वार्ड संख्या 15, 16 व 17 की समस्याओं को लेकर बंसीलाल पार्क में खुला दरबार लगाया जाएगा। इस दौरान नप के सभी अधिकारी उपस्थित रहेंगे। यह निर्णय शनिवार नप कार्यालय में पार्षदों की आयोजित बैठक में लिया गया। नप कार्यालय में आयोजित पार्षदों की बैठक में चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह ने शहर की स्वच्छता को पंख लगाने के मकसद से खुला दरबार लगाने का प्रस्ताव रखा, जिस पर सभी पार्षदों ने अपनी सहमति की मोहर लगा दी। चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप का तर्क था कि शहर के हरेक वार्ड में खुला दरबार लगाया जाएगा। खुले दरबार में लोगों की गलियों के पक्का करवाने, सफाई व्यवस्था के साथ साथ कूडा व कचरा उठाने को लेकर बातचीत की जाएगी।

हर वार्ड में लगेगा खुला दरबार : भवानी

नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह ने बताया कि नगरपरिषद द्वारा हर वार्ड में खुले दरबार लगवाए जाएंगे। इसी क्रम में रविवार को वार्ड संख्या 15,16 व 17 के लोगों की बंसीलाल पार्क में आयोजित खुले दरबार में लोगों की समस्याएं सुनी जाएंगी। खुला दरबार सुबह नौ बजे शुरू होगा और जब तक लोगों की समस्याएं रहेंगी। तब तक वहां पर संबंधित वार्ड के पार्षद के अलावा नप के अधिकारी मौजूद रहेंगे। इस दौरान मौके पर ही समस्याओं का समाधान करवाए जाने का प्रयास रहेगा।

विज्ञान के प्रयोगों से बच्चों में बढ़ती रूचि

चरखी दादरी । शहीद धर्मेश सांगवान राजकीय माध्यमिक विद्यालय खेड़ी बत्तर में विद्यार्थियों ने विज्ञान की पुस्तक जिज्ञासा से जल की यात्रा के पाठ्यक्रम अनुसार विज्ञान आधारित माडल, चार्ट व स्लोगन आदि बनाए। विज्ञान अध्यापक रविंद्र कुमार बादल की अगुवाई में बच्चों द्वारा वाष्प-गैस-द्रव-बादल- संघनन-बर्फ-ठोस को दर्शाते हुए मॉडल तैयार किए। मुख्याध्यापिका पूनम बूरा ने कहा कि आज पूरा विश्व तेजी से काफी आधुनिकता की राह पर चल रहा है, रोजाना कोई न कोई ऐसा नया अविष्कार होता रहता है जो कि दिखाता है कि किस प्रकार से विज्ञान हमारे जीवन को प्रभावित कर रहा है। यह भी सच्चाई है विज्ञान एक ऐसा विषय है जिसने मानवता के इतिहास में अपनी पकड़ हमेशा प्रमुखता से साबित की है।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक रविवार 23 नवंबर 2025

बदल रहा मौसम का मिजाज
बढ़ती गर्मी-घटती सर्दी

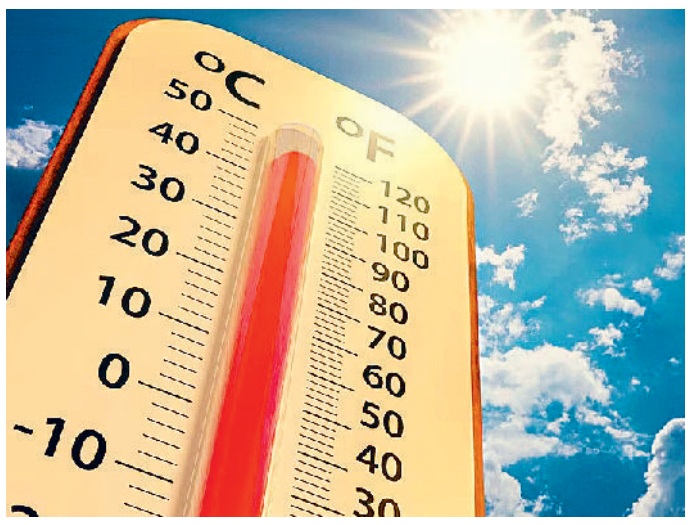

हालांकि इस वर्ष आने वाले दिनों के लिए कड़ाके की ठंड पड़ने की संभावना बताई जा रही है। लेकिन जिस तरह से मौसम का मिजाज वैश्विक स्तर पर बदल रहा है, उससे आगामी वर्षों में सर्दी की अवधि और उसकी तीव्रता घटती जाएगी। इसके उलट वर्षा कम होगी और गर्मी की तपिश बढ़ती जाएगी। इसके कई दुष्प्रभाव देखने को मिलेंगे। ऐसे में प्रभावी नीति बनाने के साथ सामूहिक प्रयास भी करने होंगे।

कवर स्टोरी
संजय श्रीवास्तव

सर्दी धीरे-धीरे बढ़ रही है। मौसम विभाग की ताजा भविष्यवाणी के अनुसार आने वाले दिनों में उत्तरी भारत में प्रबल शीत लहर की आशंका है। मौसम विज्ञानियों का कहना है कि इस साल जबरदस्त ठंड पड़ेगी। वजह होगी पर्याप्त वर्षा और अलनीनो प्रभाव। मगर क्या इस दौरान हम कड़कड़ाती सर्दियों वाले दिनों के लंबे दौर भी देखेंगे? यह भी आशंका है कि ठेठ ठिठुरन वाले दिन कुछ कम ही रहेंगे। सर्द रातों और ठंडी हवाओं का कम होना, केवल मौसम का प्रश्न नहीं बल्कि जीवन के संतुलन से भी जुड़ा है। यदि सरकारों ने वैज्ञानिक नीतियों को जनजीवन से जोड़ने की गति नहीं बढ़ाई और आम लोगों ने जरूरी सहभागिता नहीं की तो आने वाले वर्ष 2100 तक भारतीय उपमहाद्वीप का मौसम ऐसा होगा, जहां 'गर्मी ही सामान्य' और 'सर्दी एक दुर्लभ अनुभव' रह जाएगी।

आने वाले वर्षों में घटेगी सर्दी

संयुक्त राष्ट्र संघ एन्वॉयर्नमेंटल पैनल ऑफ क्लाइमेट की रिपोर्ट बताती है कि 1980 से 2020 के बीच यानी चालीस सालों में बेहद ठंडी रातों और अत्यंत सर्द दिनों की संख्या में चार गुना की कमी आई है। ग्लोबल वार्मिंग के चलते जमीनी सतह का तापमान बढ़ने से बाकी दिनों में भी ठंड सामान्य ही रह रही है। ऐसे में घने कोहरे वाले दिन भी साल दर साल घट रहे हैं। यदि मौजूदा रुझान जारी रहा तो साल 2050 तक भारत में भीषण सर्दी वाले दिनों में 60 से 70 प्रतिशत की उल्लेखनीय गिरावट आने और गर्मी वाले दिनों में तीन गुना बढ़ोत्तरी की आशंका है।

ठंड की अवधि होती जाएगी कम

नेचर पत्रिका के अध्ययन के अनुसार 2080 से 2100 के बीच गर्म दिनों और रातों की घटनाएं सात गुना तक बढ़ेंगी। इस कारण 'कड़ाके की ठंड के दिन' लगभग विलुप्त हो सकते हैं। फिलहाल यह तय है कि अब सर्दियां 'पिछली शताब्दियों जैसी लंबी और स्थायी' नहीं होंगी। ठंड की अवधि कुछ कम और तीव्रता अस्थाई रहेगी। अल्पकालिक मौसमी उतार-चढ़ाव बने रहने के साथ सर्दी में भी कभी-कभी बारिश, गर्मी और पश्चिमी विक्षोभ के जैसे मौसम के अतिरेकी तेवर देखने को मिलेंगे। पांच-सात दशकों के बाद सर्दी का लगभग लोप हो जाना भविष्य के लिए कितना विनाशकारी होगा, इसका अंदाजा भी भयावह है।

बदल रहा है मौसम का चक्र

इस बात के संकेत अब स्पष्ट होने लगे हैं कि हिमालय से लेकर दक्षिण तक मौसम का पारंपरिक चक्र तेजी से बदल रहा है। भारत 'गर्मी प्रधान देश' बनने की दिशा में तेजी से बढ़ रहा है।

उत्तराखंड में कई जगहों पर बीते एक-दो दशकों के बीच तापमान में सामान्यतः तीन डिग्री तक की बढ़त देखी गई है। कमोबेश यही हाल हिमाचल और कश्मीर का भी है। वैज्ञानिकों के अनुसार भारत में न्यूनतम तापमान प्रति दशक औसतन 0.2 डिग्री सेल्सियस की दर से बढ़ता जा रहा है। इसका मतलब है कि ठंडी हवाएं चलने की अवधि सिमटती जा रही है, जबकि गर्म रातें अब लंबी चलती हैं। इसका नतीजा यह है कि मिट्टी में नमी दिन-प्रतिदिन घट रही है। पेड़ कटने से हवा की नमी भी कम हो रही है। उधर जलस्रोत सूख रहे हैं, तो नदियों और पहाड़ी जलस्रोतों का पुनर्भरण कम हो रहा है और इसके चलते वर्षा चक्र अस्थिर हो गया है।

फसलों पर दिख रहा असर

हिमालयी और पर्वतीय राज्यों में इसका असर अब साफ दिख रहा है। सेब, केसर और बागवानी की अन्य फसलें जो ठंडी रात-दिन के अंतर पर निर्भर हैं, उनका उत्पादन गिरने लगा है। सेब के फूल बिन मौसम खिल जा रहे हैं, तो उनके पकने और रसीले होने के लिए जो कड़क सर्दी चाहिए, वह उनको लगातार कुछ दिनों तक नहीं मिल रही, सो गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ रहा है। किसान अब कम ऊंचाई पर 'ऊष्णकटिबंधीय फसलें', बाजरा और मक्का उगाने को मजबूर हैं, जिससे पहाड़ी कृषि की पारंपरिक पहचान मिटती जा रही है। फूलों और औषधीय पौधों की जैवविविधता भी खतरे में है, उनकी रासायनिक गुणवत्ता, औषधीय प्रभावशीलता भी कम हो रही है, क्योंकि तापमान बढ़ने से परागण और फूलने का समय असंतुलित हो गया है, उनके रासायनिक संघटक बदल जा रहे हैं।

स्वास्थ्य-पर्यावरण पर पड़ेगा असर

पर्यावरणविद और मौसम विज्ञानी दोनों इस बात पर सहमत हैं कि बदलते मौसम की वजह से नमी विहीन सूखी गर्म हवाओं की अवधि 2050 तक दोगुनी हो सकती है। यह बदलाव खेती किसानी से लेकर जीवन के लिए आवश्यक जैविक सूक्ष्मजीवों के पनपने में असंतुलन तो पैदा करेगा ही, साथ ही कीट-रोगों के फैलाव जैसी समस्याएं भी बढ़ेंगी। स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार 2030 तक भारत में गर्मी से उपजी बीमारियों से मरने वालों की संख्या तीन गुना बढ़ सकती है। डेंगू, मलेरिया जैसी बीमारियां नए क्षेत्रों में भी पैर पसारेंगी। विशेष रूप से वृद्धजन, बच्चे और मजदूरी करने वाले सबसे अधिक जोखिम में हैं। जाहिर है इस प्रक्रिया से जनधन दोनों को बहुत नुकसान होगा। जंगलों में आग को भी इससे हवा मिलेगी। इस तरह सर्द रातों का घट जाना सिर्फ मौसम परिवर्तन नहीं बल्कि पारिस्थितिक संतुलन के अस्थिर होने का संकेत है।

होगा भारी आर्थिक नुकसान

भीषण सर्दी वाले दिनों के दौर कम होने से पैदा जलवायु असंतुलन का सीधा नुकसान अर्थव्यवस्था और स्वास्थ्य तंत्र पर पड़ेगा। बताते हैं, वैश्विक तापमान में चार डिग्री सेल्सियस का इजाफा, अर्थव्यवस्था को 40 फीसदी कमजोर कर देगा। अनुमान है कि जलवायु आपदाओं के कारण देश को हर साल सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 2 फीसदी तक घट सकता है। अगर दुनिया वैश्विक तापमान में होती वृद्धि को दो डिग्री सेल्सियस पर सीमित रखने में सफल भी हो जाती है, तो इसकी वजह से प्रति व्यक्ति औसत जीडीपी में 16 फीसदी की गिरावट आ सकती है।

बढ़ेंगी प्राकृतिक आपदाएं

घटती सर्दी, बढ़ती गर्मी के कारण श्रम उत्पादकता में कमी, जीडीपी को कम करेगी। फ्लैश फ्लड, बादल फटने एवं बाढ़ तथा भू-स्खलन की घटनाओं की संख्या और भयावहता दोनों बढ़ेंगी तो अवसंरचना को नुकसान होगा। इसका परोक्ष प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा। *

बनना होगा एन्वॉयर्नमेंटल कॉन्शस

एन्वॉयर्नमेंटल मैनेजमेंट की ताजा रिपोर्टों ने भारत की जलवायु को लेकर जो गंभीर चेतावनी दी है, उसके प्रति सरकार और जनमानस में कितनी चिंता है, इसके प्रति उनका सरोकार कैसा है यह तो निकट भविष्य में पता चलेगा। लेकिन अब समय आ गया है कि सरकारों को इसके लिए बहुस्तरीय तैयारी करनी होगी। शहरों में 'ग्रीन बेल्ट' और कूलिंग-कॉरिडोर नीति को अनिवार्यतः लागू करना होगा। पर्वतीय राज्यों में जलवायु अनुकूल कृषि, जल संरक्षण, ग्लेशियर तथा निगरानी प्रणालियां बढ़ानी होंगी। शहरी इलाकों में हरित आवरण, वर्षा जल संचयन और ऊर्जा दक्ष भवनों को बढ़ावा देना होगा। जलवायु परिवर्तनों को सह सकने वाली फसलों के अनुसंधान को बढ़ावा मिलना चाहिए। जंगलों की कटाई पर रोक लगे। पर्यावरणीय चेतना को प्राथमिकता दिए बिना इस आसन्न संकट से बचाव कठिन है।

हम जैसा भोजन करते हैं, उससे हमारे स्वास्थ्य पर ही नहीं पर्यावरण पर भी असर होता है। कई स्टडीज में साबित हुआ है कि प्लांट बेस्ड डाइट हैबिट, हमारी हेल्थ और पर्यावरण को सुरक्षित रखने में बहुत मददगार साबित हो सकता है। इस बारे में जानिए।

प्लांट बेस्ड डाइट हैबिट
स्वस्थ जीवन-सुरक्षित पर्यावरण

जीवनशैली
मोनिका सिन्हा

आज की तेज रफ्तार जीवनशैली में जहां जंक फूड, नॉनवेज फूड्स और अत्यधिक प्रिजर्व्ड फूड्स हमारी थाली का हिस्सा बन चुकी हैं, वहीं वैज्ञानिक शोध बार-बार यह सिद्ध कर रहे हैं कि प्लांट आधारित भोजन यानी पौधों से उत्पन्न होने वाली डाइट, हमारे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी है। यह न केवल शरीर को पोषण देता है बल्कि गंभीर बीमारियों जैसे कैंसर, मधुमेह और हृदय रोगों का जोखिम भी काफी हद तक कम करता है।

स्टडीज में हुआ खुलासाः जुलाई 2024 में वी. वियालोन और उनके सह-लेखकों द्वारा प्रकाशित एक वैज्ञानिक रिपोर्ट में यह बताया गया कि जिन लोगों की जीवनशैली में धूम्रपान, अत्यधिक शराब सेवन, असंतुलित खान-पान और अनियमित नींद जैसी आदतें शामिल नहीं थीं, उनमें टाइप 2 डायबिटीज, कैंसर और हृदय संबंधी रोगों का खतरा बहुत कम पाया गया। यह अध्ययन 'स्वस्थ जीवनशैली सूचकांक' पर आधारित था और इसका उद्देश्य यह समझना था कि व्यक्ति की आदतें उसके दीर्घकालिक स्वास्थ्य पर कितना प्रभाव डालती हैं।

कई बीमारियों से बचाएः प्लांट बेस्ड डाइट के फायदों को जानने की दिशा में किए गए डॉ. डी सुब्रमणियन के एक रिसर्च पेयर में यह बताया गया कि पौधों पर आधारित आहार लेने वाले लोगों में कैंसर और हृदय संबंधी बीमारियों का खतरा बहुत कम होता है। इस अध्ययन में डेनमार्क, दक्षिण कोरिया, स्पेन और ब्रिटेन सहित कई देशों के लगभग चार लाख लोगों के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। शोधकर्ताओं ने पाया कि जो लोग फलों, सब्जियों, साबुत अनाज, दालों और मेवों पर आधारित भोजन लेते हैं, उनमें 'मल्टीमॉर्बिडिटी' अर्थात एक साथ दो या अधिक दीर्घकालिक बीमारियों का खतरा, काफी घट जाता है। शोध में यह भी पाया गया कि प्लांट आधारित आहार इंसुलिन प्रतिरोध को कम करता है, जिससे शरीर में ग्लूकोज का स्तर नियंत्रित रहता है और मेटाबॉलिक बीमारियों पर काबू पाया जा सकता है।

कई पोषक तत्वों से होता है भरपूरः पौधों पर आधारित आहार उच्च फाइबर, विटामिन, खनिज और एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर होता है, जो शरीर को बीमारियों से लड़ने की शक्ति देता है और कोशिकाओं को क्षति से बचाता है। अध्ययन से यह भी सिद्ध हुआ कि जो लोग नियमित रूप से फल, सब्जियां और अनाज का सेवन करते हैं, उनमें बीपी, कोलेस्ट्रॉल, स्ट्रोक, हृदयाघात और टाइप 2 डायबिटीज जैसी बीमारियों का खतरा बहुत कम होता है।

होता है ईकोफ्रेंडलीः प्लांट आधारित भोजन का एक और बड़ा लाभ यह है कि यह पर्यावरण की दृष्टि से भी अत्यंत उपयोगी है। मीट, मछली और अंडे जैसे पशु आधारित भोजन की तुलना में पौधों पर आधारित भोजन से ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बहुत कम होता है। इसका सीधा संबंध जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संतुलन से है। हालांकि वैज्ञानिक दृष्टि से मेडिटेरेनियन आहार को दुनिया के कई देशों में स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है, परंतु उसमें मछली और चिकन का उपयोग होता है। इसके विपरीत वीगन आहार में किसी भी पशु उत्पाद यहां तक कि दूध का भी उपयोग नहीं किया जाता। इस दृष्टि से प्लांट आधारित या वीगन आहार स्वास्थ्य के साथ-साथ नैतिक और पर्यावरणीय दृष्टि से भी अधिक उपयुक्त माना जाता है।

करना चाहिए प्रोत्साहितः अगर हम भारत की बात करें तो यहां लगभग 35 प्रतिशत लोग शाकाहारी हैं। वे अनाज, दालें, फल और सब्जियों को अपने भोजन में नियमित रूप से शामिल करते हैं। इनमें से कुछ लोग दूध और दुग्ध उत्पाद भी लेते हैं, जबकि लगभग 10 प्रतिशत लोग पूरी तरह वीगन डाइट लेते हैं। हालांकि चिंता की बात यह है कि भारत की शहरी आबादी का लगभग 16 प्रतिशत हिस्सा मधुमेह से पीड़ित है और ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्री डायबिटीज के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। धूम्रपान, तंबाकू सेवन, अस्वस्थ खान-पान और शारीरिक निष्क्रियता इस समस्या को और गंभीर बना रही हैं। अब समय आ गया है कि हमारे नीति निर्माता, स्वास्थ्य विशेषज्ञ और आम नागरिक प्लांट आधारित आहार के महत्व को समझें। विद्यालयों, कार्यस्थलों और अस्पतालों में प्लांट आधारित भोजन को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। लोगों को यह बताया जाना आवश्यक है कि मांस और तले हुए भोजन की जगह ताजे फल, सब्जिया, दालें और साबुत अनाज को अपनी थाली में शामिल करना फायदेमंद है। वर्तमान समय में जब जीवनशैली से जुड़ी बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं, ऐसे में प्लांट आधारित भोजन केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवन की आवश्यकता है। यह न केवल रोगों से बचाव करता है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और नैतिक जीवनशैली की दिशा में भी एक सशक्त कदम है। अब समय है कि हम अपने भोजन के प्रति सचेत हों। प्लांट आधारित भोजन को अपनाकर हम न केवल अपना स्वास्थ्य सुधार सकते हैं, बल्कि धरती को भी अधिक सुरक्षित और संतुलित बना सकते हैं। *

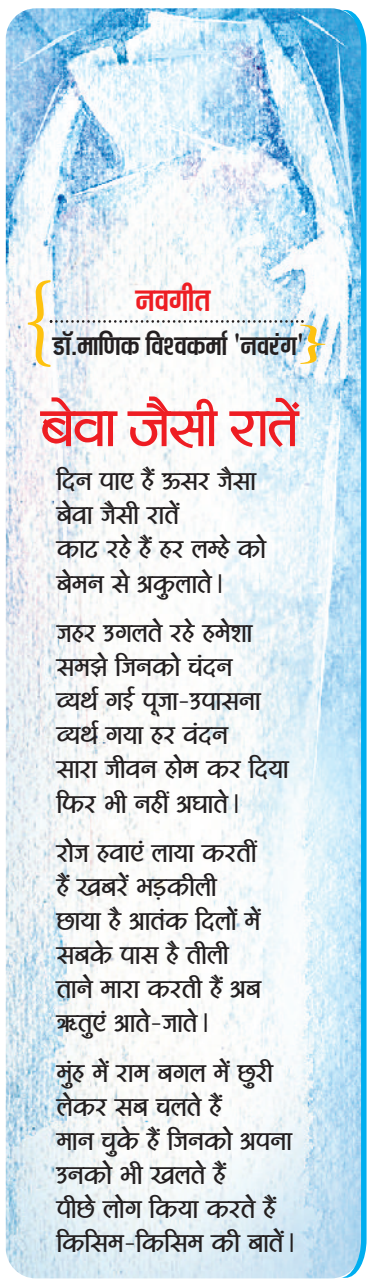

नवगीत
डॉ.माणिक विश्वकर्मा 'नवरंग'

बेवा जैसी रातें

दिन पाए हैं ऊसर जैसा
बेवा जैसी रातें
काट रहे हैं हर लम्हे को
बेमन से अकुलाते।

जहर उगलते रहे हमेशा
समझे जिनको चंदन
व्यर्थ गई पूजा-उपासना
व्यर्थ गया हर वंदन
सारा जीवन होम कर दिया
फिर भी नहीं अघाते।

रोज हवाएं लाया करतीं
हैं खबरें भड़कीली
छाया है आतंक दिलों में
सबके पास है तीली
ताने मारा करती हैं अब
ऋतुएं आते-जाते।

मुंह में राम बगल में छुरी
लेकर सब चलते हैं
मान चुके हैं जिनको अपना
उनको भी खलते हैं
पीछे लोग किया करते हैं
किसिम-किसिम की बातें।

लघुकथाएं

कंपोस्ट

समाज सेवा के क्षेत्र में बृजेश जी के योगदान से प्रभावित वह उनसे मिलने उनके घर पहुंचा। लेकिन वहां पहुंचकर उसे बृजेश जी के व्यवहार और जीवनशैली में अलग ही रंग नजर आया।

'दो सौ पांच .. दो सौ छह.. और यह दो सौ सात पता तो यही है, लेकिन यह मकान तो नहीं लग रहा।' मकान खोजते हुए मैं सोच रहा था। तभी नेमप्लेट पर नजर पड़ी- ब्रजेश आहूजा 'हम्म यही है।'

दरअसल, आठ-नौ वर्ष बाद मैं इस इलाके में आया था। इस बीच ये साधारण-सा घर न केवल सिंड्रेला की तरह कीमती लिबास पहन चुका था, बल्कि साथ वाले दो सौ आठ नंबर को डकार कर खासा मुटिया भी गया था। मकान की चार दीवारी के अंदर से झांकते अशोक के छोटे-छोटे पेड़ मानो, मुझे पहचानने की कोशिश कर रहे थे।

'जब मैं पिछली बार आया था तब तुम नहीं थे।' मैंने भी जतला दिया और घर के दरवाजे पर लगी घंटी बजा दी। ब्रजेश जी वर्षों से समाज-सेवा के लिए समर्पित हैं। गरीबों, बेसहारों और वंचितों के लिए तीन तो एनजीओ चलाते हैं, और इनके अतिरिक्त भी कई संस्थाओं के परामर्श-मंडल में शामिल हैं। आए दिन इस पुण्य कर्म हेतु पुरुस्कृत और सम्मानित भी होते रहते हैं। आज भी मैं अपनी संस्था द्वारा दिए जा रहे सम्मान का निमंत्रण लेकर ही उनके घर पर आया था।

गेट खुलने में ज्यादा देर नहीं लगी। खोलने वाला अशोक के पेड़ों से पुराना था, सो उसने आदर से अंदर आने के लिए कहा। अंदर घुसते ही मकान के वैभव से थोड़ी चमत्कृत-सी आंखें इधर-उधर टोहने लगीं तो बृजेश जी अपने बगीचे के एक कोने में खड़े नजर आए। शाम के छह बज रहे थे। एयर कंडीशनर की ठंडी हवा खाने के अरमान को जब्त करते हुए मैंने बृजेश जी का अभिवादन किया और अपने चेहरे पर उभर आया पसीना पोंछते हुए यह बोल ही दिया, 'बृजेश जी! इतनी गर्मी में घर से बाहर यहां?'

'अरे! आओ-आओ मित्र! हम तो सेवक ठहरे। हमारे लिए क्या गर्मी वर्मी, वैसे कंपोस्ट बना रहे हैं। सरकार तो अब जागी है, हम तो कब से पर्यावरण के लिए प्रयासरत हैं।' उन्होंने सगर्व कहते हुए अपने सामने खोदे गए लगभग तीन फीट गहरे और ढाई फीट चौड़े एक गड्ढे की ओर संकेत किया। तभी घर के अंदर से उनका बावर्ची एक थाली में सब्जियों और फलों के ढेर सारे छिलके लाया और उस गड्ढे में डाल कर चला गया। तब तक माली बगीची से बटोरी सूखी पत्तियां ले आया था। उसने वो पत्तियां उस गड्ढे में डालीं और फिर बृजेश जी के इशारे पर उस पर मिट्टी की एक मोटी परत लगा दी।

'ये जैविक कचरा भी न, बड़े काम का होता है। ये जो लहलहाती बगिया देख रहे हो न, ये इसी से बनी कंपोस्ट का कमाल हैं।' बृजेश जी मुझे बताने लगे। तभी, उनके सेकरेट्री ने एनजीओ के किसी विदेशी दानकर्ता के कॉल पर होने की सूचना देते हुए फोन उनके हाथों में पकड़ा दिया। वो फोन पर बात करते हुए 'हे..हे..' करते हंस रहे थे और मेरी नजर बगिया से हटकर अब उनकी आलीशान कोठी पर टिक गई थी। *

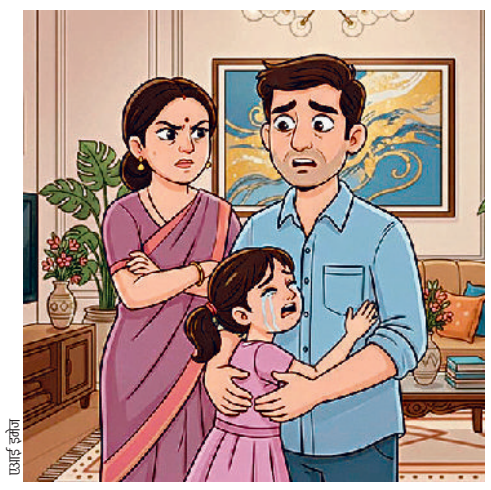

– शोभना श्याम

एआई इमेज

सच्चाई

'देखो नीलिमा, मुझे गांव जाना ही पड़ेगा। पिताजी इस दुनिया में नहीं रहे। उनके अंतिम संस्कार में तो नहीं जा पाया था लेकिन अब तेरहवीं में तो कम से कम जाना ही पड़ेगा। अरे भई, दुनिया को दिखाने के लिए जाना ही पड़ेगा। वरना लोग मुझे क्या कहेंगे? तुम बेबी के बर्थ-डे पार्टी को अच्छी तरह अरेंज कर लेना।'

तभी आठ वर्षीया बेबी वहां दौड़ती हुई आई और पापा से लिपटते हुए बोली, 'पापा आप कहां जा रहे हैं, मेरी बर्थ-डे पार्टी में आप नहीं रहेंगे क्या?'

यह सुनकर नीलिमा ने क्रोध भरे स्वर में कहा, 'तुम्हारे पापा अपने पिताजी की मरनी में जा रहे हैं। इन्हें तो हमारी कोई फिक्र ही नहीं है। अरे ऐसे व्यक्ति के मरने-जीने से हमें कोई मतलब नहीं रखना चाहिए। तुम्हारे पिताजी ने अपनी पूरी जमीन-जायदाद तुम्हारे छोटे भाई के नाम कर दी। तुम्हें क्या मिला? फिर भी तुम पिता की तेरहवीं में जाने के लिए परेशान हुए जा रहे हो।' अपने दादाजी के लिए मम्मी के मुंह से कटु वचन सुनकर बेबी को अच्छा नहीं लगा। वह रोते हुए अपनी मम्मी से बोली, 'दादाजी कितने अच्छे थे। एक बार यहां आए थे तो मुझे और चीकू भैया को कितना प्यार करते थे। हमें अच्छी-अच्छी कहानियां सुनाया करते थे। मैं भी पापा के साथ गांव जाऊंगी।'

नीलिमा ने गुस्से में कहा, 'बेबी तुम कहीं नहीं जाओगी। तुम्हारा बर्थ-डे है न। गांव में तुम्हारे पापा, चाचा सब देख लेंगे।'

'मम्मी, आप इसलिए नाराज हो न दादाजी से कि उन्होंने पापा को जमीन नहीं दिया। चाचू को सब दे दिया। पर दादाजी क्या करते। आप लोग तो दादाजी को यहां बुलाते भी नहीं थे, न ही गांव उनसे मिलने जाते थे। चाचू तो दादाजी को हॉस्पिटल ले जाते थे, उनकी अच्छी तरह देखभाल करते थे।'

कुछ ठहरकर बेबी ने बड़ी मासूमियत से पूछा, 'मम्मी, क्या पापा के मरने पर चीकू भैया भी नहीं आएंगे।' यह सुनकर बेबी के मम्मी-पापा अवाक रह गए। *

–डॉ. शैल चंद्रा

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

प्रकृति से आबद्ध काव्याभिव्यक्तियां

वर्तमान हिंदी काव्य परिदृश्य में ज्ञानेंद्रपति, वरिष्ठतम पीढ़ी के प्रतिष्ठित कवियों में शामिल हैं। वह जीवन-संवेदना की जिस भावभूमि पर उतरकर कविता रचते हैं, उनकी अभिव्यक्ति दार्शनिक आख्यान बन जाती है। इस बात को प्रमाणित करती हैं, हाल में छप कर आए उनके नवीनतम कविता संग्रह 'प्रकृति और कृति' की कविताएं। यहां उनकी कविताओं में प्रकृति के तमाम घटक सहजता से आवाजाही करते हैं और हमें कुदरत को देखने का सर्वथा नवीन दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। *'तुम चले गए/और तुम्हारे साथ मेरे जीवन का संगीत चला गया।'* (एक चिड़े के लिए अशोक गीत) और *'निफूले जीवन में भी/किसी फूल की सुगंध उठकर/नथुनों तक आती है/कभी कभी'* (चुपचाप) जैसी पंक्तियां इस बात का सघनता से अहसास कराती हैं कि प्रकृति से दूर होकर हमारा जीवन, निरंतर जीवंतता खोता जा रहा है। कितने मनोहारी और आनंदमयी अनुभूतियों से हम वंचित होते जा रहे हैं। कुछ कविताओं में वे बिल्कुल अलग तेवर में अपनी बात को पूरी सशक्तता से हमारे सामने रखते हैं। *'किताबें मनुष्यता की रीढ़ की उदग्र हड्डी बन चुकी हैं/ कोई भी अमानुषिक ताकत जिसे क्षत-विक्षत कर ले/क्षैतिज नहीं कर सकती।'* (मनुष्यता की रीढ़) *

पुस्तकः प्रकृति और कृति (कविता संग्रह), **रचनाकारः** ज्ञानेंद्रपति, **मूल्यः** 350 रुपए, **प्रकाशकः** राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

ग्रीन-अमेजिंग विंटर डेस्टिनेशंस

गर्मी के मौसम में घूमने के लिए तो आप हिल स्टेशंस जाते ही हैं। लेकिन अगर विंटर वेकेशंस में टूरिज्म की प्लानिंग कर रहे हैं तो आप कुछ ऑफबीट लेकिन खूबसूरत स्थलों का रुख कर सकते हैं। यहां की ग्रीनरी और नेचुरल टच आपको कभी न भूलने वाला अनुभव प्रदान करेंगे।

वाहनों के प्रदूषण से मुक्त माथेरान, महाराष्ट्र

टूरिस्ट प्लेसेस
शिखर चंद जैन

अगर आप शहरी भीड़-भाड़, शोरगुल और भाग-दौड़ से कुछ दिनों की छुट्टी चाहते हैं तो इस बार सर्दी की छुट्टियों में रुख करिए कुछ अल्पज्ञात मगर शांत, प्रकृति की गोद में बसे हरे-भरे विंटर डेस्टिनेशंस की ओर। यहां आपको सुकून और शांति का अहसास होगा।

हरा-भरा शीतलाखेत, उत्तराखंडः उत्तराखंड के अल्मोड़ा में स्थित शीतलाखेत एक खूबसूरत हिल स्टेशन है। यह हिमालयी गांव अपने मनोरम कुमाऊंनी दृश्यों और शांत माहौल के लिए जाना जाता है। शीतलाखेत, प्रसिद्ध टूरिस्ट प्लेस रानीखेत के पास स्थित एक उभरता हुआ पर्यटन स्थल है। इस क्षेत्र में आने वाले मुख्य पर्यटक ट्रैकर्स ही होते हैं। यहां की सभी गतिविधियां पर्यावरण के अनुकूल होती हैं। शहरों के लोग वहां के प्रदूषण से दूर, एक सुकून भरी छुट्टी बिताने के लिए शीतलाखेत आते हैं।

हरा-भरा हिल स्टेशन शीतलाखेत, उत्तराखंड

कश्मीर जैसा दरिंगबाड़ी, ओडिशाः दरिंगबाड़ी, ओडिशा के पूर्वी घाट का एक हिस्सा है, जो कंधमाल जिले में स्थित है। यह राजधानी भुवनेश्वर से 251 किलोमीटर दूर है। यह हिल स्टेशन छोटी-छोटी हरी-भरी पहाड़ियों, नदियों और झरनों से भरा है। इस क्षेत्र में चीड़ और साल के पेड़ बहुतायत में हैं। यहां आपको कॉफी के बागान भी देखने को मिलेंगे। दारिंगबाड़ी को प्राकृतिक सुंदरता के कारण ओडिशा का कश्मीर कहा जाता है। यह ओडिशा के ग्रीन कूल पर्यटन स्थलों का नया चेहरा है। प्रकृति के संरक्षण के लिए यहां कई पार्क और रिजर्व बनाए गए हैं। स्थानीय समुदायों ने पर्यटकों को क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों के बारे में बताने के लिए जगह-जगह प्रकृति शिविर बनाए हैं। सर्दियों के शुरुआती महीने, दरिंगबाड़ी घूमने के लिए आदर्श समय माना जाता है।

दक्षिण का चेरापूंजी अगुंबे, कर्नाटकः कर्नाटक के शिमोगा जिले में स्थित, अगुंबे एक छोटा-सा गांव है। इसे दक्षिण भारत का चेरापूंजी भी कहा जाता है। जैव विविधता से भरपूर इस क्षेत्र में दक्षिण भारत में सबसे ज्यादा वर्षा होती है और भारत में दूसरी सबसे ज्यादा वार्षिक वर्षा होती है। यह हिल स्टेशन मनोरम सुंदरता और ट्रैकिंग ट्रेल्स से भरपूर है। यह अंतिम जीवित निचले वर्षा वनों में से एक है। अगुंबे ही टीवी धारावाहिक 'मालगुडी डेज' में भारत के बेहद प्रसिद्ध काल्पनिक शहर मालगुडी का वास्तविक दृश्य था। यह मिरिस्टिका, लिस्टेसिया, गार्सिनिया, डायोस्पायरोस, यूजेनिया आदि औषधीय पौधों की कुछ दुर्लभ प्रजातियों का घर है। इसलिए इसे 'हसिरु होन्नू' उपनाम मिला है, जिसका अर्थ है हरा सोना। एक विशाल वर्षा वन और विविध वनस्पतियों और जीवों का घर होने के कारण, अगुंबे में अगुंबे वर्षावन अनुसंधान केंद्र स्थित है। यह भारत का सबसे पुराना मौसम केंद्र है, जो वर्षावन क्षेत्रों में होने वाले किसी भी बदलाव पर विशेष नजर रखता है। अगुंबे को 'कोबरा राजधानी' भी कहा जाता है क्योंकि यहां बड़ी संख्या में कोबरा पाए जाते हैं।

कश्मीर जैसी मनमोहक वादियों वाला दरिंगबाड़ी, ओडिशा

भरपूर बारिश के लिए प्रसिद्ध अगुंबे, कर्नाटक

वाहन मुक्त माथेरान, महाराष्ट्रः महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले में पश्चिमी घाट की सह्याद्री पर्वत श्रंखलाओं के बीच स्थित माथेरान एक आकर्षक और लोकप्रिय हिल स्टेशन है। समुद्र तल से लगभग 2,625 फीट की ऊंचाई पर बसा यह स्थान अपनी प्राकृतिक सुंदरता, शांत वातावरण और प्रदूषण मुक्त पर्यावरण के लिए जाना जाता है। माथेरान को एशिया का एकमात्र ऑटोमोबाइल मुक्त (वाहन-मुक्त) हिल स्टेशन होने का गौरव प्राप्त है, जिसका अर्थ है कि यहां किसी भी प्रकार के मोटर वाहन प्रतिबंधित हैं। यहां पर्यटक पैदल, घोड़ों पर या हाथ से खींची जाने वाले रिक्शा से घूम सकते हैं। माथेरान कई मनमोहक पॉइंट्स के लिए प्रसिद्ध है। यहां का पैनोरमा पॉइंट 360 डिग्री का विहंगम दृश्य प्रस्तुत करता है और सूर्योदय, सूर्यास्त दृश्य के लिए बहुत लोकप्रिय है। ईको पॉइंट पर गूंजती आवाजें सुनी जा सकती हैं। लुईसा पॉइंट और किंग जॉर्ज पॉइंट अपनी प्राकृतिक सुंदरता और शांत वातावरण के लिए जाने जाते हैं। यहां मौजूद शार्लोट लेक एक शांत झील है, जिसके आस-पास लोग खूब पिकनिक मनाने आते हैं। माथेरान की यात्रा का मुख्य आकर्षण नेरल से माथेरान तक चलने वाली प्रसिद्ध नैरो-गेज 'टॉय ट्रेन' है। लगभग 21 किलोमीटर लंबी यह रेल यात्रा घने जंगलों और घुमावदार रास्तों से होकर गुजरती है, जो यात्रियों को एक अद्भुत और यादगार अनुभव देती है। माथेरान मुंबई से लगभग 100 किमी और पुणे से 120 किमी की दूरी पर स्थित है। निकटतम रेलवे स्टेशन नेरल है, जहां से टॉय ट्रेन या टैक्सी द्वारा माथेरान के प्रवेश द्वार तक पहुंचा जा सकता है। प्रकृति प्रेमियों और शहर की भाग-दौड़ से दूर शांति की तलाश करने वाले पर्यटकों के लिए, माथेरान एक परफेक्ट डेस्टिनेशन हैं।

सबसे बड़ा नदी द्वीप माजुली, असमः माजुली, असम में ब्रह्मपुत्र नदी पर स्थित दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप है। माजुली और राज्य की राजधानी गुवाहाटी के बीच की दूरी 347 किलोमीटर है। यहां मौजूद ग्रामीण भारत के मनोरम दृश्य दुनिया भर के लोगों को आकर्षित करते हैं। यह द्वीप एक प्रदूषण-मुक्त क्षेत्र है। माजुली द्वीप हाल ही में सुर्खियों में आया था क्योंकि तेज कटाव के कारण यह डूबने की कगार पर पहुंच गया था। स्थानीय सरकार ने द्वीप पर एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा की है। प्राकृतिक सुंदरता के अलावा, इस द्वीप में कई सांस्कृतिक और धार्मिक इमारतें भी स्थित हैं। k

जलेबी बहुत लोकप्रिय मिठाई है, जो देश के कई इलाकों में खूब पसंद की जाती है। लेकिन इससे कई गुना बड़ा और भारी जलेबा कुछ ही स्थानों पर मिलता है। जलेबी और उसके बड़े भाई जलेबा से जुड़ी कुछ रोचक बातें।

रसभरी जलेबी का बड़ा भाई जलेबा

रोचक
अभिव्यक्ति त्रिवेदी

जलेबी तो आप सभी ने जरूर खाई होगी। बाहर से कुरकुरी और भीतर से रसभरी जलेबी भला किसे पसंद नहीं होगी। लेकिन क्या आप जानते हैं जलेबी का एक भाई भी है, जिसे कहते हैं जलेबा।

पहले बात जलेबी कीः जलेबी हर वर्ग के लोगों के बीच बेहद लोकप्रिय व्यंजन है। स्वाद में मीठी, कुंडलाकार जलेबी भारत, बांग्लादेश, पाकिस्तान, ईरान के साथ लगभग सभी अरब देशों में खाई जाती है। जलेबी के इतिहास की बात करें तो इसकी शुरुआत किसी इस्लामिक देश से मानी जाती है। मध्यकालीन किताब 'किताब-अल-तबीक' में भी 'जलाबिया' नामक मिठाई का उल्लेख मिलता है, जो अरेबिक शब्द है। फारसी में इसे 'जलिबिया' कहते हैं। 10वीं शताब्दी की अरेबिक पाक कला किताब में भी 'जुलुबिया' बनाने की कई रेसिपीज का उल्लेख मिलता है। इतिहासकारों की मानें तो जलेबी 500 साल पहले, जब तुर्की आक्रमणकारी भारत आए थे तब, हिंदुस्तान में पहुंची थी। जुलुबिया, जो अब जलेबी के नाम से जानी जाती है, एक मिठाई है। इसे मूल रूप से ईरान में इसी नाम से जाना जाता था। यह मध्यकाल में तुर्की और फारसी व्यापारियों के साथ भारत आई और धीरे-धीरे भारत में एक लोकप्रिय मिठाई बन गई। 10वीं शताब्दी के एक अरबी ग्रंथ में भी इस मिठाई का उल्लेख है, जिसमें इसे 'जलाबिया' कहा गया है।

कई नाम हैं प्रचलितः श्रीलंका में इसे 'पानी वलालु' कहते हैं, जो उड़द और चावल के आटे से बनती है। भारत के उत्तर-पश्चिम में इसे जलेबी, महाराष्ट्र में जिलबी तथा बंगाल और बांग्लादेश में 'जिलपी' कहा जाता है। ईरान के अलावा ट्यूनीशिया में इसे 'जष्लबिया' के नाम से जाना जाता है, वहीं नेपाल में इसे 'जेरी' कहते हैं।

कई रूपों में प्रसिद्धः भारत के लगभग हर कोने में जलेबी बहुत लोकप्रिय है, लेकिन यह उत्तर भारत, पश्चिम बंगाल और बिहार में विशेष रूप से पसंद की जाती है। मध्य प्रदेश के जबलपुर में 'खोया जलेबी' प्रसिद्ध है तो आंध्र प्रदेश के तेनाली में गुड़ की जलेबी लोकप्रिय है, जिसे 'वेल्लम जिलेबी' कहा जाता है। गुजरात में 'जलेबी-फाफड़ा' नाश्ते के तौर पर बहुत प्रचलित है। भारत की तरह ही, पाकिस्तान, बांग्लादेश, ईरान और कई अरब देशों में भी जलेबी को बहुत पसंद किया जाता है।

ऐसे बनाते-खाते हैं जलेबीः जलेबी बनाने में मैदा, यीस्ट यानी खमीर, घी या तेल, शक्कर और पानी का इस्तेमाल किया जाता है। इनके अलावा पनीर जलेबी, आलू की जलेबी, मावा-खोया जलेबी आदि कई प्रकार की जलेबियां मार्केट में उपलब्ध हैं। कई शहरों में इसे पोहा-जलेबी, रबड़ी जलेबी, दूध-जलेबी आदि कई तरह से खाया जाता है।

लाजवाब होता है जलेबाः अपने देश में कुछ जगहों पर और खास अवसरों पर बड़े आकार की जलेबी, जिसे जलेबा कहते हैं, बहुत लोकप्रिय है। जलेबी और जलेबा में मुख्य अंतर उनके आकार और गाढ़ेपन का होता है। एक जलेबा करीब 250 ग्राम वजन का हो सकता है। जलेबा एक सामान्य जलेबी का विशाल और मोटा संस्करण यानी 'किंग साइज' संस्करण होता है, जिसका हर टुकड़ा काफी बड़ा होता है। इसे पकने और चाशनी में पूरी तरह भीगने के लिए ज्यादा समय तक तला जाता है, जबकि जलेबी पतली और कुरकुरी होती है।

कुछ ही जगह मिलता है जलेबाः जलेबा कुछ ही जगहों पर मिलता है। भारत की धार्मिक राजधानी बनारस में भादो महीने में रतजगा पर्व के अवसर पर जलेबा मिलता है। वहां के भरतपुर, झंझोर, उदार, बरवा सहित कई गांवों में जलेबा की दुकानों पर शाम होते ही भीड़ लग जाती है। इसके अलावा दीपावली के अवसर पर पुरानी दिल्ली के कुछ इलाकों में, हरियाणा के मेवात में भी जलेबा बनाया और चाव से खाया जाता है। k

विशिष्ट पेड़
वीना गौतम

स्वास्थ्य-आर्थिक लाभ दिलाए एवोकेडो का पेड़

एवोकेडो (वानस्पतिक नाम-पर्सिया अमेरिकाना) मूल रूप से मध्य अमेरिका, विशेष रूप से मैक्सिको, ग्वाटेमाला और पेरू में पाया जाने वाला पेड़ है, जो सन 1900 के आस-पास भारत में अंग्रेजों के जरिए आया था। तब से कई दशको तक यह एक सजावटी फल के रूप में केरल, तमिलनाडु और कर्नाटक तक ही सीमित रहा। 60 के दशक के बाद से लोगों ने इसके महत्व को जानना-समझना शुरू किया। अपनी न्यूट्रीशन वैल्यू के कारण एवोकेडो का फल सुपरफूड के रूप में दिनों-दिन विख्यात होता गया और इसकी डिमांड दिन-ब-दिन बढ़ती गई।

अनुकूल भौगोलिक स्थितियांः एवोकेडो लगभग 18 से 28 डिग्री सेंटीग्रेड यानी मध्यम तापमान वाले वातावरण में अच्छी तरह फूलता-फलता है। इसलिए इसे उत्तर और मध्य भारत के ऐसे इलाकों में उगाया जा सकता है, जहां कड़ी ठंड या भीषण गर्मी नहीं पड़ती। मसलन उत्तराखंड के हलद्वानी, काशीपुर, उधमसिंह नगर आदि में इसकी खेती की जा सकती है। इसके अलावा हिमाचल के निचले हिस्सों में, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के कुछ इलाकों में एवोकेडो की खेती की जाती है।

ध्यान रखने योग्य बातेंः एवोकेडो का पौधा फरवरी-मार्च या अगस्त-सितंबर के बीच रोपना चाहिए। पहले 15 से 20 दिन में लगातार सिंचाई करनी चाहिए। जनवरी से जून के बीच जब फल लगने का समय होता है, उस समय इस पेड़ को लगातार सींचना चाहिए, नहीं तो फल सूखकर गिर जाते हैं। पेड़ के इर्द-गिर्द मलचिंग करनी चाहिए ताकि नमी बनी रहे और खरपतवार न बनें।

किसानों के लिए है फायदे का सौदाः एवोकेडो की बढ़ती मांग के कारण आज इसका बाजार मूल्य 300 से 400 रुपए प्रति किलो तक पहुंच गया है। यही कारण है कि एवोकेडो की फसल भारत में किसानों के लिए फायदेमंद 'कैश क्रॉप' रूप में उभरी है। आमतौर पर एवोकेडो का पेड़ तीन से चार साल के बीच में फल देना शुरू कर देता है। अच्छी तरह विकसित एवोकेडो का एक पेड़ औसतन 80 से 150 किलोग्राम फल हर वर्ष देता है। अगर एक एकड़ में एवोकेडो के 100 पेड़ लगा लिए जाएं तो किसान को हर साल औसतन 2 से 8 लाख रुपए की कमाई आसानी से हो सकती है। k

सिने ट्रेंड
मनोज प्रकाश

फूल अपनी खूबसूरती, सुगंध और मोहकता के लिए जाने जाते हैं। हिंदी फिल्मों में भी फूलों ने नायिकाओं की खूबसूरती में चार चांद लगाने में बड़ी भूमिका निभाई है। साथ ही फिल्मी गीतों और सींस को रूमानी बनाने में भी फूलों का अहम रोल रहा है। हिंदी फिल्मों और फूलों के कनेक्शन पर एक नजर।

फूलों से खूब निखरती रही है फिल्मी एक्ट्रेसेस की खूबसूरती

अधिकांश फूल अपने-आप में इतने सुंदर-मोहक होते हैं कि उन्हें देखकर मन प्रफुल्लित हो उठता है। उस पर जब कोई फिल्म अभिनेत्री अपने बालों में कोई फूल या फूलों का गजरा लगा ले तो उनकी खूबसूरती में मानो चार चांद लग जाते हैं। नरगिस से लेकर नरगिस फाखरी तक, हेलन से हेमा मालिनी तक, रेखा से राखी तक, मीना कुमारी से मुमताज तक, शर्मिला टैगोर से शिल्पा शेट्टी तक, माला सिन्हा से माधुरी दीक्षित तक। चाहे किसी भी पीढ़ी की अभिनेत्री रही हों, सभी ने अपनी सुंदरता बढ़ाने के लिए फूलों को न सिर्फ अपने बालों में लगाया बल्कि उनकी रंगत इस तरह बिखेरी कि हर दौर में दर्शक उनके जलवों के कायल होते रहे हैं। फिल्म निर्माता-निर्देशकों के लिए फूल सदियों से प्रेरणा का सबब रहे हैं। हर रंग, हर तरह के फूल फिल्मी दृश्यों की सुंदरता, नजाकत और काव्यात्मकता को बढ़ा देते हैं।

'हरियाली और रास्ता' में माला सिन्हा-मनोज कुमार

'आराधना' में ' शर्मिला टैगोर के साथ राजेश खन्ना

फूलों से बढ़ती है दृश्यों की खूबसूरतीः फिल्मी दृश्यों में अगर फूलों के बाग हों, तो नायक-नायिका की रोमांटिक उपस्थिति इनसे और बढ़ जाती है। गीत या फिर किसी दृश्य में अगर फूल नजर आते हैं, तो उनकी सुंदरता कई गुना बढ़ जाती है। इसके एक नहीं कई उदाहरण हैं। राखी और शशि कपूर पर फिल्माए गए गीत 'ओ मेरी शर्मीली' (शर्मीली) में गुलाब की रौनक है, तो शर्मिला टैगोर-राजेश खन्ना पर फिल्माए गए गीत 'कोरा कागज था ये मन मेरा' (आराधना) को और भी रोमांटिक किया है डहेलिया के फूलों ने। एवरग्रीन गीत 'मेरे सपनों की रानी कब आएगी तू' (आराधना) में राजेश खन्ना, सुजीत कुमार जब चलती ट्रेन में बैठी शर्मिला टैगोर को छेड़ते हैं, तो शर्मिला के बालों में लगे छोटे-छोटे लाल फूल सारे माहौल को रंगीन कर देते हैं। दरअसल, फूल कोई भी हो, अगर उसे करीने से लगाया और प्रस्तुत किया जाए तो वह नायिका की खूबसूरती और गीतों-दृश्यों की रूमानियत को और भी बढ़ा देता है।

'अपना देश' में मुमताज-राजेश खन्ना

मुमताज का यूनीक गजरा-स्टाइलः मुमताज ऐसी अभिनेत्री रही हैं, जो अपनी स्टाइलिंग के कारण आज भी युवा पीढ़ी के लिए फैशन आइकॉन हैं। राजेश खन्ना-मुमताज की फिल्म 'अपना देश' के गीत 'कजरा लगा के, गजरा सजा के बिजुरी गिरा के जइयो न' में मुमताज ने जिस तरह से बेला के फूलों से बना गजरा लगाया, वह आज भी अनेक महिलाओं के लिए एक मानक बना हुआ है। आज भी शादी या किसी अन्य समारोह में जब कोई महिला गजरा लगाती है, तो ज्यादातर उसका स्टाइल मुमताज जैसा ही होता है। इसी फिल्म का एक अन्य गीत है, 'सुन चंपा, सुन तारा, कोई जीता, कोई हारा' जिसमें मुमताज अपने चिर-परिचित अंदाज में अभिनय की रौनक बिखेरती हैं। उनके साथ-साथ कोरस गाने वाली साइड आर्टिस्ट्स ने भी बालों में फूल लगाए हैं। पूरे गीत में बालों में लगे फूलों से जो समा बंधा है, वह देखते ही बनता है।

1973 में आई फिल्म 'लोफर' में फरीदा जलाल की शादी में लाल शरारा कुर्ते पर बालों में गजरा लगाकर मुमताज ने बता दिया कि अगर फूलों का गजरा लगाना हो, तो स्टाइल क्या होगी। इसी फिल्म के सुपरहिट गीत 'मैं तेरे इश्क में मर न जाऊं कहीं' में उन्होंने फूलों के प्रिंट से सजी साड़ी पर सफेद गुलदाउदी लगाकर दर्शकों को अपना दीवाना बना लिया था।

'ब्लैकमेल' में राखी के साथ धर्मेंद्र

'शर्मीली' के एक गीत में राखी-शशि कपूर

फूलों से निखरी इनकी भी खूबसूरतीः 'आज मैं जवान हो गई हूं' (मैं सुंदर हूं) गीत में लीना चंदावरकर, 'पल-पल दिल के पास कोई रहता है' (ब्लैकमेल) में राखी की खूबसूरती और उनकी उपस्थिति को फूलों ने और भी सुंदर-मोहक बना दिया। फिल्म 'हरियाली और रास्ता' में मनोज कुमार और माला सिन्हा पर फिल्माया गया गीत 'बोल मेरी तकदीर में क्या है' में माला सिन्हा ने अपने बालों को गुलदाउदी से इस प्रकार से सजाया है कि उनकी मंद-मंद मुस्कान की मोहकता और भी बढ़ गई। आगे चलकर साल 1992 में रिलीज फिल्म 'तहलका' के 'दिल दीवाने का डोला दिलदार के लिए' में अभिनेत्री ने अपनी पूरी चोटी को फूलों में गुंथकर ऐसा स्टाइल बनाया कि सालों तक यह फैशन शादियों में दुल्हन के सिर चढ़कर बोला।

फूलों वाले ये सदाबहार गीतः बात फिल्म और फूलों की चली है तो यहां एक और बात का जिक्र करना जरूरी हो जाता है। हिंदी फिल्मों में जहां एक ओर अभिनेत्रियों ने अपनी हेयर स्टाइलिंग के लिए फूलों का प्रयोग किया, तो शायरों/गीतकारों ने अपने गीतों में फूलों का खूब और बखूबी इस्तेमाल किया, कभी सीधे-सीधे तो कभी प्रतीक के रूप में। 'आरजू' फिल्म का गीत 'ऐ फूलों की रानी बहारों की मलिका', 'सूरज' का गीत 'बहारो फूल बरसाओ, मेरा महबूब आया है', 'सरस्वती चंद्र' का 'फूल तुम्हें भेजा है खत में', 'प्रेम पुजारी' का 'फूलों के रंग से' जैसे तमाम ऐसे गीत हैं, जो आज भी महफिलों में बजते हैं। सोशल मीडिया के दौर में भी इन सदाबहार गीतों पर खूब वीडियोज बनाए जाते हैं और समय-समय पर ये गाने ट्रेंड भी करते हैं। k

इंवेंशन
डॉ. दीपक कोहली

भविष्य में ग्रीन एनर्जी उत्पादन में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है आर्टिफिशियल लीफ। इस दिशा में देश-विदेश में लगातार प्रयोग किए जा रहे हैं। इस बारे में आप भी जानिए।

ग्रीन एनर्जी का फ्यूचर आर्टिफिशियल लीफ

आज विज्ञान और नवाचार का युग है। बदलते परिवेश में जब पूरी दुनिया ऊर्जा संकट, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन की गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है, तब वैज्ञानिक नई दिशाओं की खोज में जुटे हैं। इसी खोज की परिणति है, कृत्रिम पत्ता या आर्टिफिशियल लीफ। यह एक ऐसा आविष्कार है, जो मानव सभ्यता को स्वच्छ, सस्ती और टिकाऊ ऊर्जा प्रदान करने की दिशा में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है।

पेड़ों के हरे पत्ते जब सूर्य के प्रकाश की ऊर्जा को उपयोग में लाते हुए कार्बन डाइऑक्साइड और जल से भोजन बनाते हैं, तो उस प्रक्रिया को प्रकाश संश्लेषण कहा जाता है। इस प्रक्रिया में सूर्य की ऊर्जा रासायनिक ऊर्जा में परिवर्तित हो जाती है। यही सिद्धांत आर्टिफिशियल लीफ का आधार बना। यह एक ऐसा उपकरण है, जो सूर्य की किरणों की सहायता से जल को हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विभाजित करता है।

ऐसे करता है कामः आर्टिफिशियल लीफ या कृत्रिम पत्ते का ढांचा सामान्य पत्ते जैसा ही होता है, किंतु इसमें विशेष प्रकार के प्रकाश-संवेदी पदार्थ और उत्प्रेरक धातुएं लगाई जाती हैं, जो सूर्य की ऊर्जा को अवशोषित कर रासायनिक अभिक्रियाएं प्रारंभ करती हैं। इस प्रक्रिया में जब सूर्य का प्रकाश कृत्रिम पत्ते पर पड़ता है, तो यह जल के अणुओं को विभाजित कर देता है। परिणामस्वरूप हाइड्रोजन और ऑक्सीजन उत्पन्न होती है। प्राप्त हाइड्रोजन को संग्रहित कर स्वच्छ ईंधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

विदेशी विवि में हुए प्रयोगः सबसे पहले हार्वर्ड विश्वविद्यालय (अमेरिका) के वैज्ञानिकों ने आर्टिफिशियल लीफ का सफल प्रयोग किया। उन्होंने सिलिकॉन और निकिल जैसे तत्वों का उपयोग करके ऐसा उपकरण बनाया, जो साधारण सूर्य के प्रकाश में भी जल को विभाजित करने में सक्षम था। इसके बाद मैसाचुसेट्स प्रौद्योगिकी संस्थान (एमआईटी), कैंब्रिज विश्वविद्यालय और टोक्यो विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने भी इस दिशा में उल्लेखनीय योगदान दिया।

भारत में भी हो रहे अनुसंधानः भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर के वैज्ञानिकों ने एक ऐसा कृत्रिम पत्ता विकसित किया है, जो बहुत कम सूर्य प्रकाश में भी काम कर सकता है। यह पानी से हाइड्रोजन उत्पन्न करता है। इसी प्रकार भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंग्लुरू ने कृत्रिम पत्तों में नैनो-प्रौद्योगिकी का उपयोग कर उनकी कार्यक्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि की है। उनके द्वारा विकसित कृत्रिम पत्ते पर्यावरणीय कारकों, जैसे तापमान और आर्द्रता के बावजूद स्थिर रहते हैं। इसके साथ ही राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली और राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे भी इस दिशा में निरंतर कार्यरत हैं।

भविष्य के लिए उपयोगीः आज दुनिया की सबसे बड़ी चुनौती है, ऊर्जा का बढ़ता हुआ उपभोग और घटते पारंपरिक स्रोत। कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस जैसे स्रोत सीमित हैं और प्रदूषण के बड़े कारण भी। इसके विपरीत, आर्टिफिशियल लीफ सूर्य की असीम ऊर्जा का उपयोग करती है, जो निःशुल्क और अनंत है। यदि इस तकनीक का बड़े पैमाने पर उत्पादन और उपयोग संभव हो सका, तो आने वाले समय में हर घर स्वयं अपनी ऊर्जा उत्पन्न कर सकेगा। k